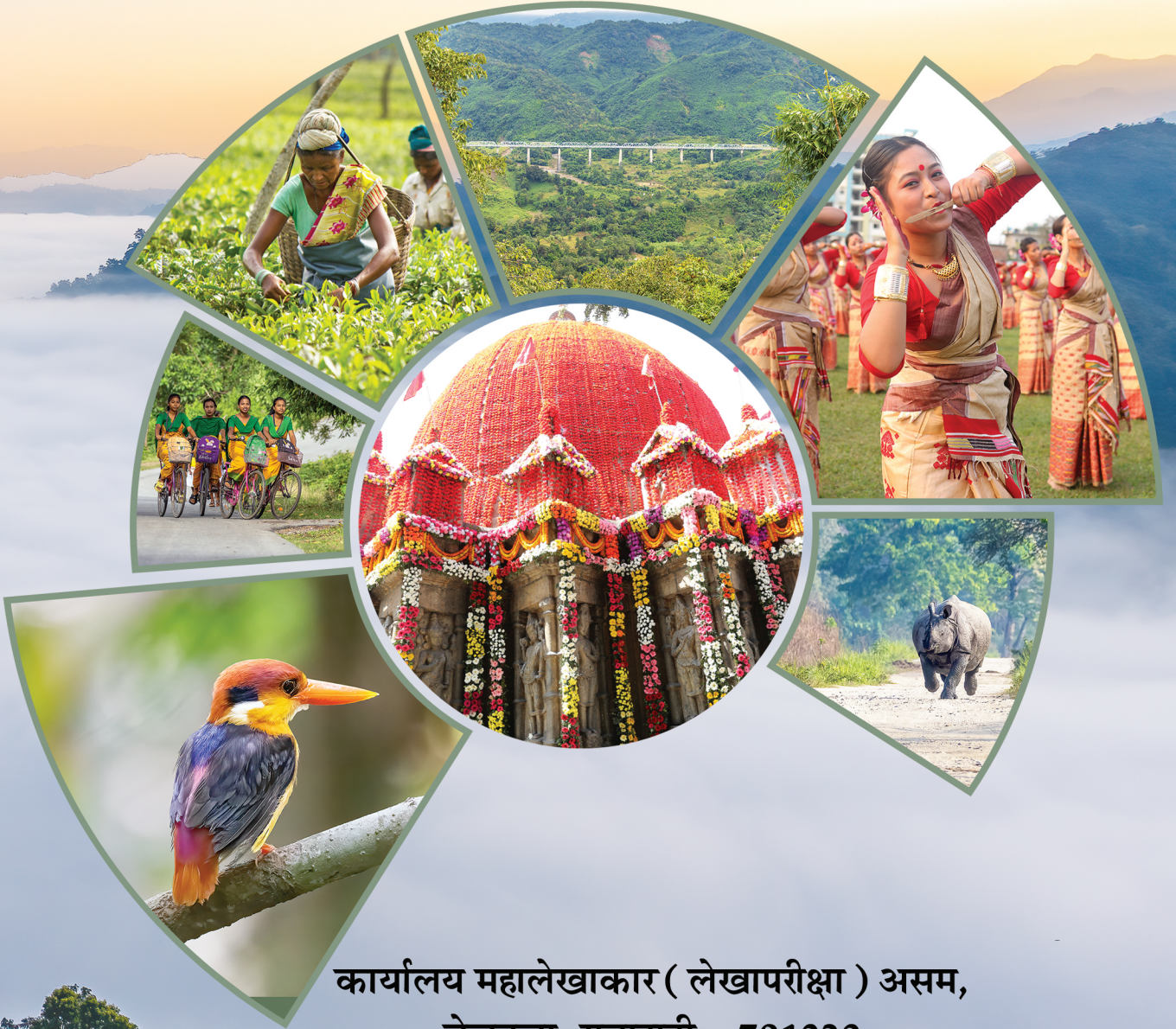




SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

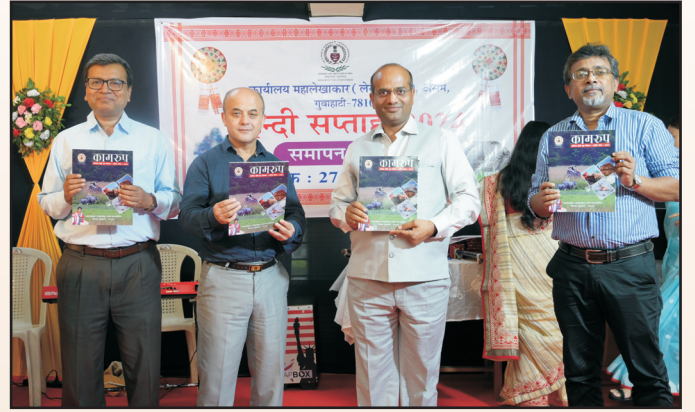
कामरूप

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका :: चतुर्थ अंक :: 2025



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम,
बेलतला, गुवाहाटी - 781029

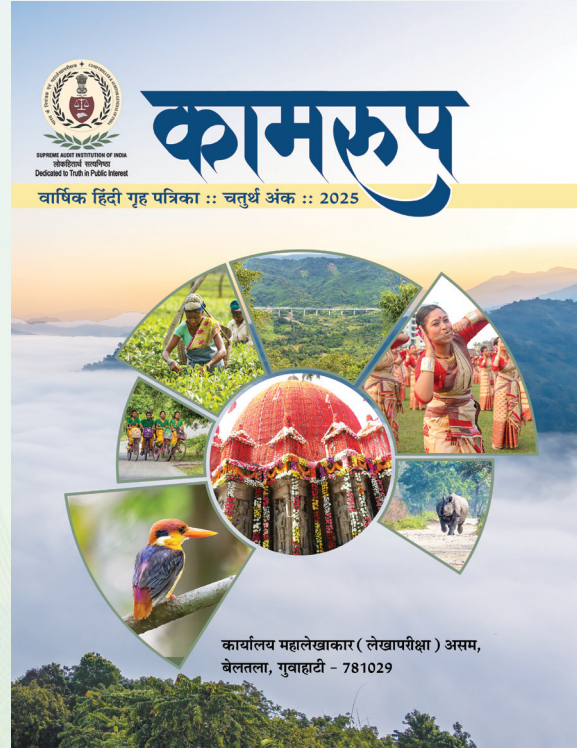
हिन्दी सप्ताह - 2024 के समापन समारोह की कुछ झलकियाँ



कामरूप

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका

चतुर्थ अंक :: वर्ष 2025



- प्रकाशक : कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम,
बेलतला, गुवाहाटी-781029
- मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा
- मुखपृष्ठ डिजाइन : श्री रत्नजीत चौधुरी, सहायक पर्यवेक्षक

पत्रिका परिवार

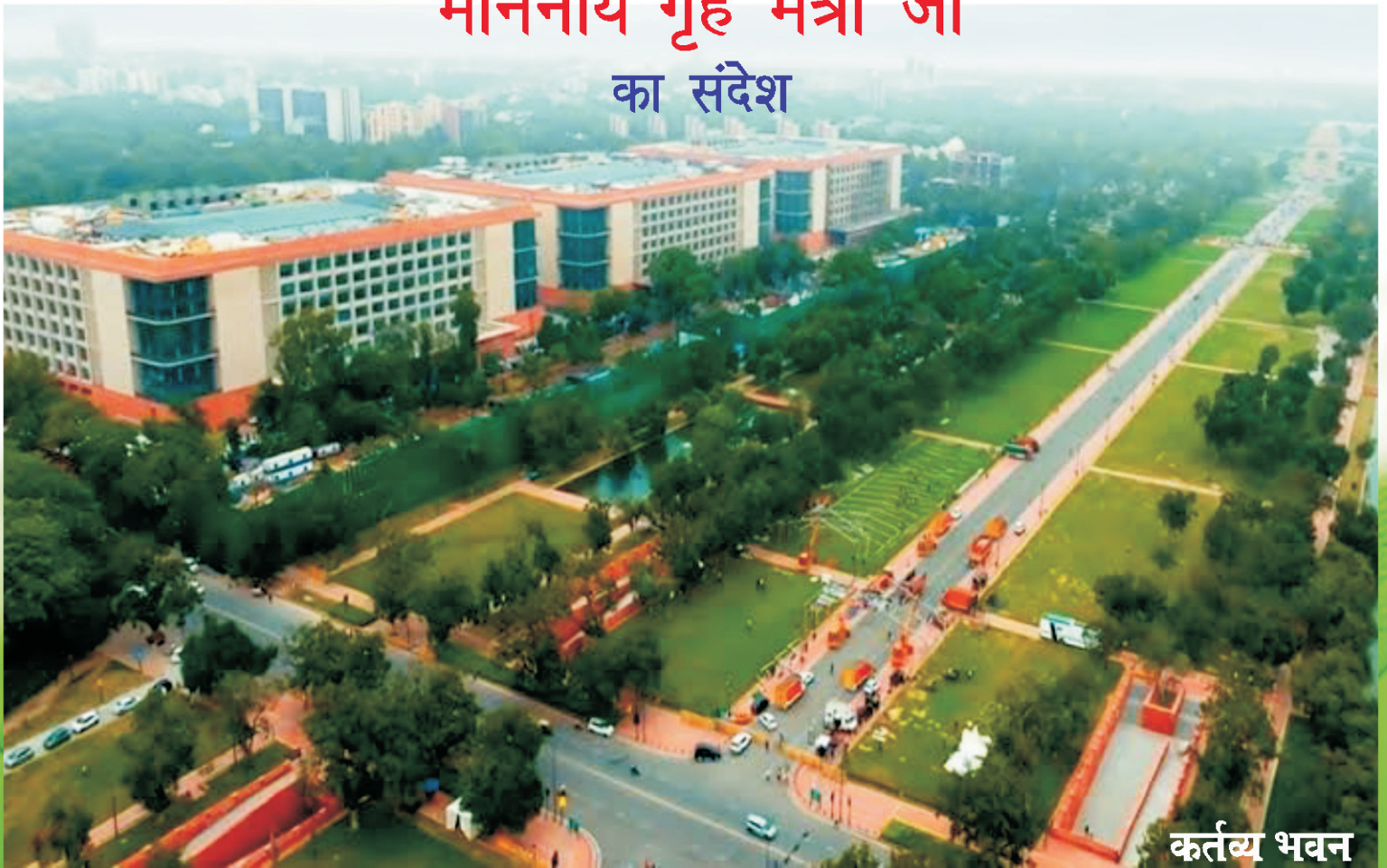
- संरक्षक :** श्री कुमार अभय
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम
- परामर्शदाता :** श्री ज्योतिमय बाईलुंग
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन, ए.एम.जी.-I एवं III)
श्री बिनोद भुजेल
उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II)
श्री बाप्पादित्य मजूमदार
उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-IV एवं एल.जी.ए.)
- मुख्य संपादक :** श्री विप्रजीत पुरकायस्थ
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
- सह संपादक :** श्री श्रीकांत लाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुश्री मौसमी चौधरी
सहायक निदेशक (राजभाषा)
श्री विकास भौमिक
वरिष्ठ अनुवादक
श्री दीपक जोशी
कनिष्ठ अनुवादक
श्री पंकज शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक
श्री अभिनव कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, अतः संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।



हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश

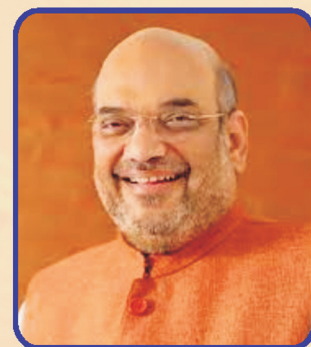


कर्तव्य भवन

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

**अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार**



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा—प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान—विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल—मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत—प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव—देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार-विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार-प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी-20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदयों को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13-14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी-नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:

"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"

अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

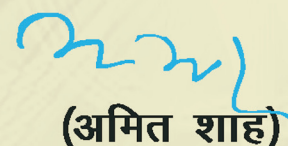
आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2025


(अमित शाह)



सत्यमेव जयते

संदेश



हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ !

“कामरूप” के चतुर्थ अंक के माध्यम से आप सभी के समक्ष अपनी बात रखने का और आपके साथ विचार साझा करने का जो यह अवसर प्राप्त हुआ है, यह मेरे लिए अत्यंत गौरव का पल है। राजभाषा हिंदी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं संस्कृति का प्रभावी स्रोत है और उसी राजभाषा में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का उद्देश्य हिंदी के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों में रुचि जगाना है, जिसे मैं “कामरूप” पत्रिका के प्रकाशन के रूप में सफल होते देख पा रहा हूँ।

किसी भी सरकारी संस्थान की पत्रिका केवल कार्यालयीन गतिविधियों और अधिकारियों व कर्मचारियों की हिंदी के प्रति अभिरूचि को अभिव्यक्त करने का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह उन्हें खुद में उस लेखन प्रतिभा को खोजने का अवसर प्रदान करती है। इसलिए इन पत्रिकाओं का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास बन जाता है। भाषा क्षेत्र ‘ग’ में होने के बावजूद हमारे कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों का हिंदी भाषा के प्रति उत्साह किसी हिंदी भाषी क्षेत्र से कम नहीं है।

प्रशासनिक और साहित्यिक कलेवर को लपेटे हुए “कामरूप” के इस अंक में अपना योगदान देने वाले सभी रचनाकार सहित संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। आशा है कि आपको “कामरूप” का यह अंक पसंद आएगा। “कामरूप” को हर दृष्टि से बेहतर बनाने के लिए हम कृतसंकल्प हैं और इस पर आपके सुझावों और मनोभावों का भी हार्दिक स्वागत करते हैं।

“कामरूप” के इस अंक और भावी अंकों के लिए मेरी अशेष शुभकामनाएँ।

जय हिन्द ।

(कुमार अभय)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम



सत्यमेव जयते

संदेश



हिंदी गृह पत्रिका “कामरूप” के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक बधाई। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ रचनाकारों की लेखन प्रतिभा के साथ-साथ राजभाषा के प्रति उनके स्नेह, सम्मान और अभिरूचि को इंगित करती हैं। रचनाकारों के कुशल प्रयास के लिए मैं उनकी सराहना करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि आपके सहयोग से पत्रिका अपने अनवरत सफल प्रकाशन से उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

“कामरूप” के इस अंक के सफल प्रकाशन में समर्पित सहयोग के लिए संपादक मंडल भी बधाई के पात्र हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी निष्ठा और प्रतिबद्धता को दोहराते हुए आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिन्द ।

(ज्योतिमय बाईलुंग)

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(प्रशासन, ए.एम.जी.-I एवं III)



सत्यमेव जयते

संदेश



राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी लेखन के प्रति झिझक मिटाने एवं रुचि पैदा करने में कार्यालयीन पत्रिका का काफी योगदान रहता है, और मुझे यह जानकारी प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय द्वारा हिंदी गृह पत्रिका के चतुर्थ अंक “कामरूप” का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह पत्रिका कार्यालय के कर्मियों के राजभाषा हिंदी के प्रति अपार श्रद्धा एवं प्रेम का प्रतिफल है। मैं इन सभी प्रतिभाशाली रचनाकारों एवं संपादन कार्य में संलग्न कर्मियों को सहृदय धन्यवाद देता हूँ, जिनके सहयोग से इस अंक का सफल प्रकाशन संभव हो पाया है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिन्द ।

बि भुजेल

(बिनोद भुजेल)

उप महालेखाकार

(ए.एम.जी.-II)



सत्यमेव जयते

संदेश



विविध रचनाओं से सुवासित पंखुड़ियों से सुसज्जित “कामरूप” का चतुर्थ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। सभी रचनाकारों ने अपनी-अपनी कलाओं को अपनी रचना में संजोने का जो अतुलनीय कार्य किया है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

मुझे आशा है कि पत्रिका में समाहित रचनाएँ आपको पसंद आएंगी और इसी प्रकार हम सभी राजभाषा के उत्थान में अपना अथक योगदान देते रहेंगे।

जय हिन्द ।

बाप्पादित्य

(बाप्पादित्य मजूमदार)

उप महालेखाकार

(ए.एम.जी.-IV एवं एल.जी.ए.)

संपादकीय...

हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'कामरूप' का चौथा अंक आपको समर्पित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के कर्मियों एवं उनके संबंधियों द्वारा प्रदान की गई रचनाओं का संकलन है। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी रचनाकारों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। पत्रिका में प्रकाशन हेतु रचना प्रदान करने वाले सभी रचनाकार सर्वप्रथम बधाई के पात्र हैं।

शुरुआत से ही 'कामरूप' के प्रकाशन का मूल उद्देश्य हिन्दी में कामकाज की झिझक को दूर करने और उसमें अभिरूचि उत्पन्न करना रहा है। जिसके लिए कार्यालय ने हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषा-भाषी कार्मिकों की रचनाओं को किसी प्रतियोगिता की भावना से रहित हो कर सराहा है, और अवसर देने का प्रयास किया है और उसी के परिणामस्वरूप हम अपने लक्षित ध्येय को साधने में सफल हो रहे हैं। हमें यह कहते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि "ग" भाषाई क्षेत्र में होते हुए भी कार्मिकों का उत्साह और पत्रिका के लिए प्राप्त हुई रचनाओं का स्तर प्रतिस्पर्धात्मक रूप से किसी हिन्दी बहुल क्षेत्र से कम नहीं है। इस पत्रिका में कहानी, लेख, कविता, यात्रा वृत्तान्त आदि साहित्यिक विधाएँ शामिल हैं, जो ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन से भी भरपूर हैं।

आदरणीय पाठकों से निवेदन है कि वे पत्रिका को पढ़ें एवं अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएँ जिससे हमें इस पत्रिका को अधिक से अधिक मनोरंजक और ज्ञानवर्धक बनाने में प्रेरणा एवं मार्गदर्शन मिले।

सम्पादक



अनुक्रमणिका

◆ विकसित भारत: लक्ष्य एवं चुनौतियाँ	श्री सत्यम कुमार	1
◆ बाबू भिखारी	श्री तपजीत दत्ता	4
◆ हिन्दी	श्री राहुल कुमार	7
◆ कार्य एवं जीवन संतुलन	सुश्री अद्रिजा सिन्हा	8
◆ एक यात्रा: आध्यात्मिकता की ओर	श्री अभिनव कुमार चौधरी	9
◆ एक पेड़ की मौत	श्री तपजीत दत्ता	13
◆ शिक्षा	सुश्री सुमायरा	14
◆ गँवई-बियाह	श्री सत्येन्द्र पाण्डेय	14
◆ देवदूत	सुश्री रत्ना जोयारदार	15
◆ डॉ. श्रीकांत जिचकर - ज्ञान और नेतृत्व का अविस्मरणीय संगम	श्री श्रीकांत लाल	18
◆ नीलांचल की देवी	श्री सन्नी राज	23
◆ चिंटू	श्री दीपक जोशी	21
◆ भाषा	श्री ओम प्रकाश उपाध्याय	22
◆ कर्म योग	सुश्री वर्णाली घोष	23
◆ बेटा	सुश्री ज्योति राजखोवा लामा	24
◆ जीवन-पथ	श्री हंस कुमार तिवारी	25
◆ गरीबी	सुश्री रत्ना जोयारदार	26
◆ बैडमिंटन: एक लोकप्रिय खेल	श्री राणा कुमार बरुआ	27
◆ हिन्दी सिनेमा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव	श्री अश्वनी कुमार	29
◆ कहानी से पटकथा तक का सफर	श्री अभिनव कुमार	31
◆ येलागिरी की यात्रा	श्री पंकज शर्मा	32

विकसित भारत: लक्ष्य एवं चुनौतियाँ



श्री सत्यम कुमार
लेखापरीक्षक



‘विकसित भारत’ का औपचारिक शुभारम्भ एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। भारत की आजादी के 100वें वर्ष, यानि वर्ष 2047 तक भारत को पूर्ण विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने की सम्भावना वास्तव में मनोरम है। देश की तीव्र प्रगति को देखते हुए इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को साकार होते देखना संभव प्रतीत होता है। यह रूपांतरण युग इच्छित विकास की अवधारणा का मूल्यांकन करने का भी अवसर प्रदान करता है। विकास प्राथमिकताओं और केन्द्र बिंदु क्षेत्र का चयन जटिल और महत्वपूर्ण दोनों हैं।

विकसित भारत के तहत आर्थिक विकास पर अत्यधिक बल दिया गया है। विकसित भारत के लक्ष्य की ओर अग्रसर होने से पूर्व हमें कुछ अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी गौर करना होगा। हमें ये नहीं भूलना होगा कि भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र होने के साथ-साथ युवाओं का भी देश है, इसलिए हम विकसित राष्ट्र के लक्ष्यों को तब तक पूरा नहीं कर पाएँगे जब तक भारत का हर-एक युवा शिक्षित, कौशल-पूर्ण, सेवायोजित, समृद्ध एवं खुशहाल न हो जाए।

विकसित राष्ट्र हेतु हमें एकमात्र पहलू जैसे कि सकल घरेलू उत्पाद के अलावा हमें खुशहाली सूचकांक, मानव एवं सामाजिक विकास सूचकांक, हरित सूचकांक, वैश्विक नवाचार सूचकांक आदि पर भी ध्यान देना होगा, हमें मध्यम वर्ग पर पूरा जोर देना होगा तथा हमें हर क्षेत्र में आत्म-निर्भर होना पड़ेगा। हालाँकि भारत सरकार द्वारा पिछले कुछ वर्षों में इस ओर कदम उठाए गए हैं किन्तु इन सब में अभी भी खामियाँ हैं। चाहे वो सरकार द्वारा लाई गई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति हो अथवा अन्य कुछ ऐसी योजनाएँ। सरकार को पेशेवर शिक्षा के अलावा शारीरिक शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर भी जोर देना होगा। सरकारी अथवा गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों के बीच अंतर को पाटना होगा। अगर आज हम कहें कि शिक्षा माफिया, कोचिंग माफिया, भू माफिया, ड्रग्स माफिया आदि इस देश के विकास के अवरोधों में से एक हैं तो इसमें कोई

अतिशयोक्ति नहीं होगी। आरक्षण का दुरुपयोग, शोषित-वंचित वर्ग को मुख्यधारा में लाने, महिला आधारित आरक्षण, जातिवाद, क्षेत्रवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद आदि मुद्दों पर भी हमें पुनर्विचार करने की जरूरत है। अगर हम कहें कि जातिवाद एक बेहतर समाज, बेहतर राष्ट्र बनाने में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है तो इसमें कोई दो राय नहीं है। सरकार आर्थिक आधार पर सभी वर्ग-समुदायों के लोगों को सशक्त करे एवं यह सुनिश्चित करे कि सरकारी योजनाओं अथवा नौकरियों में सभी वर्गों का समुचित प्रतिनिधित्व हो। सरकार को अंतर्जातीय विवाह को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। जातिवाद जैसी कु-रीति हमारे समाज में तो उत्तर-वैदिक काल के बाद आई, परन्तु इसका समर्थन, इसका दुष्परिणाम तथा यह हमारे समाज में इस स्तर तक व्याप्त हो जाएगी तथा इतना यह घातक होगी, इसका अंदाजा लगाना बड़ा ही मुश्किल था।

हमें ये चीज कदापि नहीं भूलनी चाहिए कि हम भारतीय पहले से ही हर क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं और रहेंगे। हाँ, मध्यकाल में विदेशी आक्रमण, पराधीनता के कारण हम थोड़ा कमजोर हुए हैं परन्तु समाप्त नहीं। भारत को यूँ ही नहीं सोने की चिड़िया, विश्वगुरु, भारतीय धर्म अथवा दक्षिण एशियाई धर्म की जननी कहा जाता है।

इन सबके अतिरिक्त हमें आतंकवाद, नक्सलवाद, बाहरी घुसपैठियों, प्रदूषण-नियंत्रण, जलवायु परिवर्तन आदि मुद्दों पर भी काम करना होगा। हाल ही की घटनाओं में जिस प्रकार जिहादी दहशतगर्दों ने जिस प्रकार मासूमों की जान ली तथा आतंकवाद ने दशकों से हजारों भारतीय जिंदगियों को लील लिया है, एक चिंतनीय विषय है। हम भारतीयों को हमेशा दो मोर्चों पर युद्ध के लिए सदैव तत्पर रहना होगा तथा इन सब मुद्दों को विश्व समुदाय के समक्ष रखना होगा।

हम सब में जब तक राष्ट्रवाद की भावना नहीं आएगी, तब तक हम विकसित राष्ट्र की परिकल्पना नहीं कर सकते। हमें जाति, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र, रंग, नस्लभेद आदि से परे उठना होगा। हमें अपने गौरवशाली अतीत को कभी नहीं भूलना होगा कि हम ही वो राष्ट्र हैं जिसने बाकी दुनिया को राह दिखाई। हमारे 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'अतिथि देवो भवः', 'पृथ्वी माता/देव माता' जैसे आदर्शों ने सदा ही भारतवर्ष को विश्व में अग्रणी रखा है। हम भले ही कितने भी आर्थिक रूप से, सामाजिक रूप से सशक्त क्यों ना हो जाएँ, बेहतर से बेहतर जीवनशैली को क्यों न अपना लें, हमे सांस्कृतिक रूप से भी सशक्त होना पड़ेगा, हमें अपने भारतीय मूल्यों, परम्पराओं को कभी नहीं भूलना होगा जिसके लिए हम विश्व भर में जाने जाते हैं। तब जाकर हम एक समृद्ध एवं खुशहाल भारत की कल्पना कर सकते हैं जिसकी कल्पना गाँधी, महात्मा बुद्ध ने की थी, तभी जाकर हम राम राज्य स्थापित कर पाएंगे।

हाँ, यह बात भी सही है कि अतीत में, जब ज्ञान की कमी अथवा सभ्यता की शुरुआत में, विश्व समुदाय और हम लड़ाई झगड़े, द्वंद, युद्ध में संलिप्त थे, परन्तु आज का युग, युद्ध का नहीं है, आज का युग परिवर्तनशीलता, प्रौद्योगिकी का है परन्तु शांति की स्थापना हेतु हमें आज भी युद्ध करना पड़े तो यह आज भी प्रासंगिक है।

हमें विकसित भारत के कुछ उद्देश्यों के साथ-साथ इसके पक्ष-विपक्ष पर भी प्रकाश डालना होगा। विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने हेतु हमें आर्थिक समृद्धि जिसमें उच्च प्रति व्यक्ति आय हो, इसका भी ध्यान रखना होगा। सामाजिक तरक्की हेतु हर नागरिक के जीवन स्तर में सुधार जिसमें समग्र शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ और आधारभूत संरचना शामिल हों। पर्यावरणीय स्थिरता हेतु हमें सतत विकास को प्राथमिकता देनी होगी और भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत

को संरक्षित करना होगा। समावेशी विकास हेतु हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि युवाओं, किसानों, महिलाओं एवं वंचितों सहित समाज के सभी वर्ग को सशक्त करना होगा ताकि ये सभी राष्ट्र के विकास से लाभान्वित हो सकें।

विकसित भारत के लक्ष्य हेतु हमें कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ सकता है। हमें अन्य क्षेत्रों और सामाजिक समूहों में व्याप्त गरीबी और आय असमानता को संबोधित करना होगा। परिवहन, संचार और उर्जा जैसे क्षेत्रों में पर्याप्त बुनियादी ढाँचों का विकास करना होगा। कार्यबल के कौशल और अर्थव्यवस्था के बीच असंतुलन को दूर करना तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण सुनिश्चित करना होगा। हमें संसाधनों की कमी, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन जैसी पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करना होगा। शासन संरचनाओं में सुधार करना होगा, भ्रष्टाचार में कमी करनी होगी तथा पारदर्शिता एवं जवाबदेही में वृद्धि करनी होगी। जटिल भू-राजनैतिक परिदृश्य में आगे बढ़ना तथा संभावित आर्थिक व्यवधानों का समाधान करना होगा।

विकसित भारत के लक्ष्य को पूर्ण करने हेतु हमें कुछ रणनीतियों का भी पालन करना होगा। आर्थिक सुधार हेतु राजकोषीय और मौद्रिक सुधारों को लागू करना होगा, निजी क्षेत्र के निवेश और नवाचार को बढ़ावा देना होगा। परिवहन, उर्जा और डिजिटल बुनियादी ढाँचों सहित बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में निवेश करना होगा। शिक्षा के मानकों में सुधार, व्यवसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देना होगा और कुशल - कार्यबल बनाने पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। सामाजिक समावेश हेतु हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान, महिलाओं को सशक्त बनाने और सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए नीतियों को लागू करना होगा। पर्यावरणीय संतुलन हेतु सतत विकास प्रथाओं को अपनाना, प्रदूषण को

कम करना और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना होगा। हाँ, विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु हमें सुशासन पर भी बल देना होगा। विकास-प्रक्रिया में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना होगा।

खुशहाली और कल्याण को प्राथमिकता देने की दिशा में सांस्कृतिक बदलाव को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक कार्यक्रम एवं जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। इसमें मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े टैबू को कम करने, कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ाना देने तथा सामाजिक संबंधों के महत्व पर बल देने संबंधी पहलु शामिल हो सकते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि एक विकसित और समृद्ध भारत के लिए एक साहसिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। हालांकि महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं लेकिन राष्ट्र व्यापक सुधारों और सतत और समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित करके इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। बीते दशक में हमारी सरकार ने इस ओर ठोस कदम उठाएँ हैं, अतः हम भारतीयों को भी यह बात समझनी होगी कि इस प्रतिस्पर्धात्मक विश्व में जाति, रंग, भेद, नस्ल, समुदायों से ऊपर उठकर आगे की ओर सोचना होगा, तभी हम अपने लोकतंत्र को मजबूत करके, चुनौतियों का समाधान करके और प्रभावी रणनीतियों को लागू करके भारत 2047 तक वास्तव में विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर हो पाएगा। जय हिंद। □

“हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।” - माखनलाल चतुर्वेदी

बाबू भिरवारी



श्री तपजीत दत्ता
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



बिभाष हमेशा की तरह ऑफिस रूम में दाखिल हुआ और अनंत की मेज पर नजर डाली। अनंत अपनी फाइलों में व्यस्त था। बिभाष ने पंखा थोड़ा तेज कर दिया। बिना इधर-उधर देखे, बिभाष अपनी कुर्सी पर बैठ गया। उसने अपनी कमीज थोड़ी सी खोली। आजकल गर्मी में ऑफिस जाना बहुत मुश्किल हो गया है। फिर

भी उसे आना ही पड़ता है। बिभाष की आँखों में रूमा का चेहरा घूम गया। वह छोटन को कैसे संभालेगी? बेचारा तो गर्मी बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकता। छोटन की शरारतें आजकल बढ़ गई हैं। करे भी क्यों न, मुश्किल से दो साल का है वो। दूसरी तरफ, बापन जितना बड़ा होता जा रहा है, उसका मन उतना ही पढ़ाई से उठता जा रहा है। उसके लिए एक और समस्या। क्या रूमा इतना सब संभाल सकती है? या बिभाष को घर पर ज्यादा समय देना चाहिए? एक पति होने के नाते, क्या यह सब बाँटना उसका फर्ज नहीं? बिभाष ने आँखें बंद कर लीं और सोचने लगा।

फिर आँखें खोलकर उसने अनंत की मेज की तरफ देखा। वह अभी भी काम में व्यस्त था। इन छह महीनों में अनंत को नौकरी में जो रुचि पैदा हुई है, उसे बिभाष कभी समझ नहीं पाया। वह काम के अलावा कुछ और समझना ही नहीं चाहता। यही तो कुँवारेपन की जिंदगी है। एक बार उसकी शादी हो जाए, काम का यह पागलपन अपने आप बीत जाएगा। हर कोई नई परिस्थिति में ऐसा करता है। धीरे-धीरे इस फाइल वर्क की निरर्थकता समझ में आने लगती है। एक निरंतर ऊब-सी छाने लगती है। यह सिर्फ शब्दों की बात नहीं है, यह बिभाष का बीस साल का कार्य अनुभव है। 'सुप्रभात बिभाष दा!' बिभाष की कल्पना इस 'सुप्रभात' के अभिवादन से टूट गई।

‘बिभाष दा, आज भी देर?’

–‘मत पूछो, इतनी गर्मी! उसके ऊपर बस भी टाइम से नहीं मिलती।’ अनंत हर रोज बिभाष से यही सवाल पूछता, जिसे बिभाष समझ नहीं पाता। उसे लगता है जैसे वो बिभाष का बॉस है। हर रोज बिभाष को झूठा जवाब देना पड़ता है। शादी करोगे तो सारे जवाब मिल जाएँगे। बापू, खीर में कितना चावल होता है? बिभाष क्या तुम अपना सारा काम ऐसे ही रूमा पर छोड़ सकते हो? वह भी तो एक इंसान है। अनंत को ये सब बातें बताने का क्या मतलब है। क्या एक कुँवारा, पति के फर्ज को समझ पाएगा?

‘बटुक बाबू कहाँ हैं, दिखाई नहीं पड़ रहे हैं?’ बिभाष ने विषय बदलने की कोशिश करते हुए अनंत से पूछा।

– ‘और कहाँ होंगे? सब कल के क्रिकेट मैच की समीक्षा कर रहे हैं, और कल का मैच पूरा दिन नहीं चला। साल में कितने दिन बिना काम के ऐसे ही बीत जाते हैं, इसका हिसाब कौन रखता है?’ बिभाष मुस्कुराया और बोला, ‘देखो, ऑफिस समय पर आ भी जाएँ तो भी बहुत से लोग अपना काम ठीक से नहीं करते। दरअसल, दफ्तर के काम हमेशा अच्छे नहीं लगते हैं। जिंदगी में मनोरंजन भी जरूरी है। देखते नहीं हो आजकल हर कोई मनोरंजन के लिए सोशल मीडिया में डूबा रहता है।’ बिभाष की बात सुनकर अनंत को यह समझने में जरा भी दिक्कत नहीं हुई कि बिभाष काम के प्रति अपनी अरुचि को बहसों से छुपाना चाहता था। अनंत पिछले छह महीनों से बिभाष पर नजर रखे हुए था। एक दिन वह किसी फाइल को हाथ नहीं लगाता, बस एक दिन बड़े साहब की डाँट खाने के बाद, हफ्ते भर फाइल में उलझा रहता, फिर वही पुराना मयखाना फिर आ जाता। फिर दिन भर बातें करता। आखिर में घर लौट जाता।

अनंत ने सर हिलाकर असहमति जताई – ‘नहीं बिभाष दा, तुम मेरी बात नहीं मानते। ऑफिस में काम करना हमारा फर्ज है। पसंद आने या न आने का सवाल ही क्या है? और अगर काम पसंद नहीं आता, तो नौकरी छोड़ भी सकते हो। ऑफिस में समय क्यों बर्बाद करना? हमारे देश में काम करने वालों की कमी तो है नहीं।’ – ‘तुम सही कह रहे हो अनंत, लेकिन क्या तुम जानते हो कि सबकी सोच एक जैसी नहीं होती? कोई बात नहीं। मैं तुम्हें एक और बात बताता हूँ। जानते हो, आज सुबह जब मैं ऑफिस आया, तो मैंने एक भिखारी को एक रूपये का सिक्का दिया। जानते हो उसने क्या किया? उसने पैसे मुझे ही वापस कर दिए। मुझे बहुत गुस्सा आया। कुछ बातें सुनाने के बाद मैंने उसे पैसे दे दिए। फिर भी उसने पैसे नहीं लिए। आजकल भिखारी ज्यादा रुपये दिए बिना पैसे नहीं लेते।’

– ‘बिभाष दा, तुम किसी को एक रूपया नहीं दे सकते। बताओ, एक रूपये में आजकल क्या होगा?’

‘नहीं अनंत, तुम्हें नहीं पता। भीख माँगना एक आसान पेशा है। क्या तुम नहीं देखते कि आजकल भिखारियों की संख्या कैसे बढ़ती जा रही है? और हाँ, मुझे इस पेशे से बहुत नफरत है।’ अनंत कुछ कहने से पहले ही रुक गया।

‘साहब, एक काम था, सुनिए?’ बगल से एक बुजुर्ग सज्जन ने बिभाष से दयनीय भाव से विनती की। बुजुर्ग के एक हाथ में एक छड़ी थी जिस पर उन्होंने अपनी लंबी जिंदगी का बोझ डाल रखा था, और आँखों में भारी-भरकम फ्रेम वाला चश्मा। उसने अपनी कुर्ते की जेब में पड़े कई कागजों में से एक कागज बिभाष की मेज पर रखा और बिभाष से विनती की, ‘साहब, मैंने आठ महीने पहले लोन के लिए आवेदन किया था, लेकिन मुझे आज तक लोन नहीं मिला। कृपया इसे देख लीजिए। मैं चार दिन पहले यहाँ आया था, लेकिन आप दफ्तर में नहीं थे।’

बिभाष ने कागज पर एक नजर डाली और फिर गंभीरता से बोला, ‘ठीक है, कागज छोड़ दो, एक हफ्ते बाद वापस आओ।’

बिभाष के निराश शब्द सुनकर, बूढ़े ने अपनी छड़ी मेज पर रख दी। फिर, दोनों हाथ जोड़कर, वह दयनीय भाव से बिभाष से विनती करने लगा। अनंत उस बूढ़े के कमजोर शरीर को काँपते हुए देख रहा था। उस काँपते शरीर के साथ, उसने कहा, ‘कृपया मुझे अब और बार-बार आने के लिए न कहें। हमें भूखा मरना पड़ेगा।’ बिभाष ने शर्मिंदा होकर कहा, ‘देखिए, दफ्तर के काम का एक नियम होता है और हमें उस नियम का पालन करना ही होगा। इसमें थोड़ा समय लगेगा।’

– ‘क्या आप मुझे बता सकते हैं कि इसमें कितना समय लगता है? क्या एक छोटे से लोन की मंजूरी में आठ से नौ महीने लग जाते हैं?’

– ‘ऑफिस का काम अलग है। आप उसे नहीं समझेंगे।’

– ‘आपको क्या लगता है कि मुझे ऑफिस का काम नहीं आता? पता है साहब, मैं रिटायर्ड कर्मचारी हूँ। पर मुझे ये समझ नहीं आता है कि क्या लोन की फाइल निपटाने में आठ-

नौ महीने लग जाते हैं?’ बुजुर्ग ने गुस्से से कहा और गहरी साँस ली। फिर अनंत की तरफ देखते हुए बोले, ‘मेरी तीन शादी लायक बेटियाँ हैं। ऊपर से मेरा अपना घर भी नहीं है। रिटायरमेंट का सारा पैसा बड़ी बेटी की शादी में ही खत्म हो गया। क्या चार लोगों का परिवार मामूली पेंशन से चल सकता है? मुझे दो और बेटियों की शादी करनी है। मैं क्या करूँ?’

अनंत ने देखा कि बूढ़ा आदमी बोलते हुए हाँफ रहा था। उसने अपने पसीने से तर चेहरे को, और शायद बहते आँसुओं को भी, अपने कुर्ते से पोंछा।

– ‘अगर मेरा एक काम होता, तो शायद मुझे इतनी तकलीफ न उठानी पड़ती। आर्थिक संकट लिए मैं अपनी बेटियों को ठीक से पढ़ा भी नहीं पाया। उनकी माँ की तबीयत भी ठीक नहीं है। इसलिए मैं सोच रहा था कि कर्ज लेकर कुछ करूँ...’

बूढ़ा आदमी डंडा हाथ में लिए धीरे से कमरे से बाहर चला गया। एक गहरी साँस लेते हुए, बिभाष ने सिगरेट सुलगाई। अनंत को देखकर साफ समझ आ रहा था कि वह बूढ़े आदमी को लेकर बहुत चिंतित था। उसने धुएँ का एक कश छोड़ा और अपनी घड़ी देखी।

‘चलो, अनंत, हम अब यहाँ और नहीं रुक सकते। बहुत समय हो गया है। खैर, आज का दिन पूरा हो गया है। चलो घर चलते हैं। हमें तुम्हारी भाभी को उसकी माँ के घर ले जाना है।’

ऑफिस से निकल कर बिभाष और अनंत सड़क पर बस का इंतजार कर रहे थे। बिभाष ने सुबह वाले भिखारी को उत्सुकता से देखा। सुबह एक भिखारी था अब देखो, दो भिखारी हैं, बिभाष ने अनंत की ओर इशारा करते हुए कहा।

– ‘देखो, क्या मैंने तुम्हें आज सुबह नहीं बताया था कि हमारे देश में भिखारियों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। सुबह एक था, अब दो हो गए हैं।’ अनंत ने उनकी ओर देखा और हैरान हो गया।

– ‘देखो बिभाष दा, यह दूसरा भिखारी वही आदमी है

जो तुम्हारे पास लोन माँगने आया था।’ बिभाष उन्हें देख कर चौंक गया और दोनों जाकर उन दोनों भिखारियों के पास खड़े हो गये। उनकी तरफ देखते हुए, बुजुर्ग भिखारी ने लाचार हो कर कहा—

—‘हैरान हो गए सर? आप सोच रहे हैं कि मैं एक रिटायर्ड कर्मचारी होकर सड़क पर भीख कैसे माँग सकता हूँ? बताइए क्या करूँ, मुझे अपनी जान बचानी है। सोचा था लोन लेकर कुछ काम करें। इसलिए लोन के लिए आवेदन किया। आज आठ-नौ महीने हो गए हैं, भगवान जाने कितने दिन और लगेंगे। आपके लिए ये एक मामूली काम है, पर मेरे लिए चार लोगों के पेट पालने का सवाल है। जब नौकरी होती है, तो लोग समझना ही नहीं चाहते। मैं भी ऐसा ही था। ऑफिस में काम किए बिना हर महीने अपनी तनखाह गिनता था। मैं सोचता था कि तनखाह पाना मेरा हक है। मैं ये नहीं समझता था कि अपनी मेज पर लोगों का काम करना मेरा फर्ज है। मैं भूल गया कि मुझे इसके लिए पगार मिलती है। मैं ये भी भूल गया कि बिना काम किए पैसे लेना भीख माँगने का दूसरा नाम है। नौकरी नाम का एक लाइसेंस होता था, तो मुझे वो भीख किसी से माँगनी नहीं पड़ती थी। पर सच कहूँ तो मेरी तनखाह लोगों का पैसा थी, तब मैं एक बाबू था। मतलब एक बाबू भिखारी। अब मैं सड़क पर बैठकर लोगों के पैसे लेता हूँ, इसलिए मैं सड़क का भिखारी हूँ। नहीं, मुझे शर्म नहीं आती क्योंकि मैं बेकार नौकरी करने वालों को भिखारी समझता हूँ, यानी सबको एक-एक बाबू भिखारी मानता हूँ।’ ये शब्द कह कर बूढ़े ने अपना मुँह फेर लिया।

बिभाष और अनंत एक बहुत ही सत्य तथ्य का अप्रिय विश्लेषण सुनकर दंग रह गए। बिभाष को कोई तर्क नहीं मिला जिसके साथ वह बूढ़े व्यक्ति की बातों का खंडन कर सके। चुपचाप, वे दोनों सड़क पर, बस की ओर निकल पड़े। न जाने क्यों, ‘बाबू भिखारी’ शब्द बिभाष को चुभता रहा। □

हिन्दी



श्री राहुल कुमार
लेखापरीक्षक

भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं में हिन्दी का विशेष स्थान है। हिन्दी न केवल भारत में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है, बल्कि यह भारत सरकार की राजभाषा भी है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिन्दी को देवनागरी लिपि में भारत की राजभाषा घोषित किया गया है।

हिन्दी का इतिहास बहुत समृद्ध है। यह भारतीय आर्य भाषाओं की श्रेणी में आती है और संस्कृत से इसका गहरा संबंध है। हिन्दी ने समय के साथ अनेक भाषाओं से शब्द लेकर स्वयं को समृद्ध किया है, जैसे—अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि। हिन्दी का यह लचीलापन और स्वीकार्यता ही इसकी सबसे बड़ी ताकत है।

भारत में 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया था। तभी से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना और लोगों को हिन्दी के प्रति जागरूक करना है। हिन्दी का प्रयोग सरकारी कार्यों, शिक्षा, साहित्य, फिल्म, समाचार, और रेडियो जैसे अनेक क्षेत्रों में किया जाता है। आज हिन्दी सिनेमा (बॉलीवुड) ने हिन्दी को विश्व पटल पर लोकप्रिय बना दिया

है। इसके अलावा हिन्दी समाचार चैनल, सोशल मीडिया, और इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा ने एक वैश्विक पहचान प्राप्त की है।

हालाँकि, हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिलने के बावजूद आज भी कई सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी का अधिक प्रयोग होता है। इसका एक कारण यह भी है कि भारत की कार्य-प्रणाली में अंग्रेजी का एक लम्बा इतिहास रहा है और तकनीकी शब्दावली में हिन्दी का अभाव कई बार महसूस किया जाता है। लेकिन सरकार द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं कि हिन्दी को अधिक से अधिक क्षेत्रों में प्रयोग में लाया जाए। आज आवश्यकता है कि हम हिन्दी भाषा के महत्व को समझें और इसे अपने जीवन में अपनाएँ। हमें गर्व होना चाहिए कि हिन्दी जैसी समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा हमारी राजभाषा है। मातृभाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी का सम्मान करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

हिन्दी न केवल हमारी पहचान है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर भी है। इसे बढ़ावा देना न केवल भाषा की सेवा है, बल्कि देश की एकता और अखंडता को सुदृढ़ करना भी है। आइए, हम सभी मिलकर हिन्दी को उसका उचित सम्मान दें और उसे सम्पूर्ण राष्ट्र में गौरवपूर्ण स्थान दिलाएँ। □

“हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का एक बहुत सरल स्रोत है।” – सुमित्रानंद पंत

कार्य एवं जीवन संतुलन



सुश्री अद्रिजा सिन्हा

पुत्री- श्री अरिजीत सिन्हा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



आजकल की जिंदगी एक निरंतर दौड़ बन चुकी है। हर व्यक्ति सफलता की रेस में है। ऐसा लगता है कि अगर जरा भी धीरे चले तो जिंदगी पीछे छूट जाएगी। यह बात काफी हद तक सही भी है, लेकिन इस दौड़ में हमारी व्यक्तिगत जिंदगी कहीं पीछे छूट गई है। हमें हमारे जीवन में काम और निजी जिंदगी के बीच एक संतुलन बनाने की आवश्यकता है ताकि हम न केवल तेज, बल्कि दूर तक भी आगे बढ़ सकें।

इस संतुलन का अर्थ है अपने निजी जीवन एवं कार्य के बीच में एक ऐसा तालमेल बनाना, जिससे आप अपनी मानसिक एवं शारीरिक सेहत का ध्यान रख सकें और आपके

काम में भी कोई हानि न पहुँचे। संतुलन नहीं होने या फिर कम होने के कई कारण हो सकते हैं, जिसके नुकसान देखे जा सकते हैं। अगर आप हर वक्त थके-हारे महसूस करते हैं, अगर आप अपने परिवार को समय नहीं दे पा रहे, अगर आपको अपने काम से चिढ़ या असंतुष्टि महसूस हो रही है, अगर आपकी नींद पूरी नहीं हो पा रही है, तब संभावना है कि आपके काम एवं निजी जिंदगी में असंतुलन है।

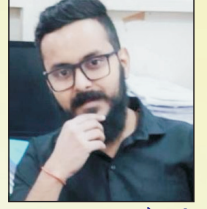
एक अच्छा संतुलन बनाना आजकल बहुत जरूरी हो गया है। इसे बनाए रखने के कई तरीके हो सकते हैं। जैसे बीच-बीच में ब्रेक लेना, सीमाएँ तय करना, ऑफिस के काम को ऑफिस तक ही रखना और परिवार एवं खुद के लिए थोड़ा समय निकालना।

अगर हम धीरे-धीरे अपने जीवन में बदलाव लाएँ, तो हम काम और निजी जीवन के बीच एक अच्छा संतुलन बना सकते हैं। यह संतुलन आगे चलकर खुश रहने और आगे बढ़ने में हमारी मदद करेगा। □

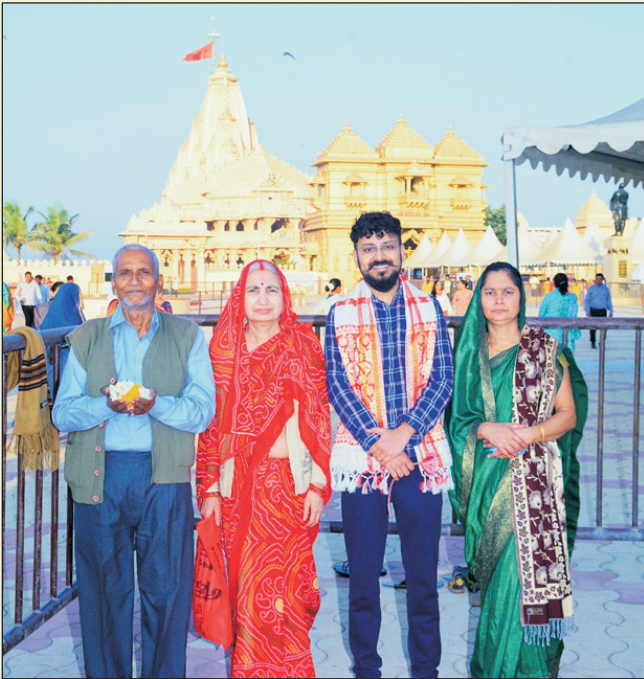
“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।”

-- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

एक यात्रा: आध्यात्मिकता की ओर



श्री अभिनव कुमार चौधरी
लेखापरीक्षक



जीवन एक यात्रा है। कभी ठहराव, कभी बहाव, तो कभी किसी अदृश्य पुकार की ओर बढ़ते कदम। शिव और कृष्ण की पावन भूमि की ओर मन बहुत समय से आकर्षित था। एक दिन निर्णय लिया — अब विलंब नहीं। आत्मा की आवाज पर चलना ही सच्ची साधना है। जीवन की आपाधापी में कभी-कभी एक विराम लेना और अंतर्मन की गहराइयों में झाँकना आवश्यक हो जाता है। कुछ यात्राएँ केवल भौगोलिक दूरियों को तय करने के लिए नहीं होतीं, बल्कि वे आत्मा के अनछुए कोनों तक पहुँचने का माध्यम बनती हैं। मेरी गुवाहाटी

से द्वारका की आध्यात्मिक यात्रा भी इसी उद्देश्य से प्रेरित थी।

गुवाहाटी से द्वारका तक

ऑफिस में छुट्टी का आवेदन भरते समय दिल में अनोखा उल्लास था। कर्म और भक्ति का समन्वय — यही जीवन का सार है। स्वीकृति मिलते ही, ओखा-द्वारका एक्सप्रेस के टिकट बुक कराए और यात्रा की तैयारी शुरू हुई। बैग में कुछ आवश्यक वस्त्र, एक निजी डायरी जिसमें अनुभवों को संजोना था, भगवद गीता की एक लघु प्रति जो मार्गदर्शक बने, और अनगिनत अनकहे सपने भरे गए। गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर ट्रेन पकड़ते समय, मन उत्साह और आस्था से भर उठा।

ट्रेन की यात्रा एक जीवंत कैनवस की तरह थी, जिस पर असम की हरी-भरी धरती, पश्चिम बंगाल की सांस्कृतिक धरोहर, बिहार की ऐतिहासिक गाथाएँ, उत्तर प्रदेश की विशालता, राजस्थान के रंगीन परिदृश्य और गुजरात की आधुनिकता के बदलते रंग चित्रित थे। प्रत्येक स्टेशन एक नई कहानी सुनाता प्रतीत हुआ, हर गुजरता दृश्य एक नया अनुभव जोड़ रहा था। ट्रेन में सफर कर रहे कुछ सहयात्रियों से आत्मीय परिचय हुआ। कोई अपने व्यापार के सिलसिले में जा रहा था, तो कोई मेरी ही तरह तीर्थयात्रा पर। हर मुस्कान में एक सहज अपनत्व था, और प्रत्येक बातचीत में भारत की विविधता का अनूठा स्वाद घुला हुआ था। खिड़की से बाहर झाँकती प्रकृति

और अंदर गूँजती विविध भाषाओं ने यात्रा को और भी स्मरणीय बना दिया। खिड़की से बाहर देखता तो कभी नदियाँ दौड़तीं, कभी खेतों में सूरज ढलता। दिल में यही भावना गूँजती —

‘नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय’

‘सत्य की ओर जाने का कोई और मार्ग नहीं है।’
(ऋग्वेद)

द्वारका पहुँचने की रात और ‘श्री धरा’ होटल में ठहरना

लगभग तीन दिन की लंबी यात्रा के बाद जब ट्रेन ने द्वारका स्टेशन पर प्रवेश किया, रात उतर चुकी थी। चारों ओर शांति थी, और हवाओं में एक अव्यक्त पवित्रता। एक स्थानीय ऑटोवाले से बात कर के ‘श्री धरा’ होटल पहुँच गया — साधारण लेकिन बहुत साफ-सुथरा। थकान इतनी थी कि बस बिस्तर पर गिरते ही गहरी नींद आ गई।

द्वारकाधीश मंदिर का दर्शन

सुबह जल्दी उठकर स्नान किया। स्वच्छ वस्त्र पहनकर मंदिर की ओर चल पड़ा। सड़कों पर हर ओर ‘जय द्वारकाधीश’ के स्वर गूँज रहे थे। चलते हुए मन के भीतर अजीब-सी बेचैनी थी — वर्षों से जिन भगवान कृष्ण के बारे में सुना, पढ़ा, सोचा, आज उनके घर में प्रवेश कर रहा था! मंदिर का प्रांगण विशाल और भव्य था। शंखध्वनि और घंटियों की गूँज के बीच जब भगवान द्वारकाधीश के दर्शन हुए, तो रोम-रोम पुलकित हो गया। भगवद गीता का एक श्लोक मन में गूँजा:

‘मांनुष्यानां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।’

(हजारों में कोई एक ही मुझे प्राप्त करने का प्रयास करता है।)

वह क्षण — निर्वाचनीय, अलौकिक! भगवान की मनमोहक मूर्ति और उनके चारों ओर भक्तों की श्रद्धा ने एक अद्वितीय आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया। 5000 वर्ष

पुरानी वह नगरी जहाँ स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने राज किया था। वहाँ कुछ क्षणों के लिए संसार का बंधन टूट गया। बस ‘स्वयं’ और ‘परमात्मा’ ही शेष रह गए।

माता रुक्मिणी मंदिर, सुदर्शन ब्रिज और बेट द्वारका की ओर

मंदिर से लौटकर मैंने बेट द्वारका की यात्रा के लिए एक टैक्सी किराए पर ली। यात्रा के दौरान, चालक ने बड़े गर्व के साथ मुझे बताया कि अब बेट द्वारका तक जाने के लिए एक आधुनिक और शानदार पुल बन गया है, जिसे सुदर्शन ब्रिज के नाम से जाना जाता है — यह प्राचीन संस्कृति और आधुनिक विकास का अद्भुत संगम है। गुजरात प्रदेश का यह नवाचार और आध्यात्मिकता का सामंजस्य देखकर मुझे गर्व महसूस हुआ।

रास्ते में रुक्मिणी माता के मंदिर के दर्शन कर मेरा मन गहरी श्रद्धा से भर गया। मंदिर के शांत और पवित्र वातावरण में देवी रुक्मिणी की दिव्य छवि ने मन को शांति प्रदान की। इसके बाद टैक्सी समुद्र पर बने भव्य सुदर्शन ब्रिज से गुजरी। यह पुल आधुनिक गुजरात की विकास-यात्रा का जीवंत प्रतीक है — जहाँ प्राचीन संस्कृति और नवीनता एक साथ चलती हैं। सामने फैला था — नीला अथाह समुद्र और उसके भीतर छुपा इतिहास। बोट पकड़ी और बेट द्वारका की ओर बढ़ चला — जहाँ कृष्ण भगवान ने अपना निजी निवास बनाया था। बेट द्वारका की भूमि पर पैर रखते ही — मन में एक अलौकिक कंपन हुआ। यह वही भूमि है जहाँ सुदामा जी आए थे चावल के दाने लेकर!

बेट द्वारका मंदिर — प्रभु के दरबार में

मंदिर परिसर के भीतर कदम रखते ही — एक अलौकिक गंध से वातावरण भीग गया था। ‘जय माधव! जय जय द्वारकाधीश!’ के उद्घोष से पूरा परिसर गूँज रहा था। भीतर प्रवेश करते समय मानो आत्मा अपने वास्तविक घर लौट आई

हो। कृष्ण के दरबार में प्रवेश करते ही अश्रुधारा फूट पड़ी — ना कोई वाणी शेष रही, ना कोई विचार। बैठा रहा वहाँ चुपचाप... मन ही मन दोहरा रहा था माधव के वो शब्द — ‘सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।’ (गीता 18.66) (‘सभी धर्मों का परित्याग कर, केवल मेरी शरण में आ जाओ।’)

भक्तों के मधुर कीर्तन, शंखध्वनि, घंटियों की टनकार... और बीच में स्वयं भगवान की अदृश्य उपस्थिति ! अद्भुत ! अलौकिक !

प्रसाद, छप्पन भोग और समुद्र के भीतर डूबी द्वारका नगरी

दर्शन के बाद प्रसाद ग्रहण किया — छप्पन भोग का स्वाद दिव्य था — घी से भीगे हुए लड्डू, माखन-मिश्री, रसदार पूरियाँ... मानो कृष्ण स्वयं सबके बीच उपस्थित हों। ऐसा लग रहा था मानो गुजराती मिठास और भगवान का आशीष एक थाली में परोस दिया गया हो। इसके बाद, समुद्र में डूबी हुई प्राचीन द्वारका नगरी के दर्शन के लिए एक छोटी नाव यात्रा की। नीले रंग का शांत पानी और उसके नीचे दिखाई देती प्राचीन ईंटें और स्तंभ, यह दृश्य इतिहास को साक्षात् आँखों के सामने प्रस्तुत कर रहा था। प्राचीन द्वारका के अवशेषों को देखकर समय की अनित्यता और आत्मा की अमरता का गहरा

बोध हुआ। कल्पना कीजिए — एक समय यह वही नगरी थी जहाँ श्रीकृष्ण ने जीवन जिया था ! यह दृश्य देखते हुए गीता का श्लोक स्मरण हुआ —

‘ततः स विस्मयविष्टो हृष्ट-रोमा धनंजयः। प्रणम्य शिरसा देवं कृतान्जलिर अभिषतः॥’ (गीता 11.14)

(उस मनमोहक दृश्य को देखकर अर्जुन विस्मय और गहरी श्रद्धा से भर गया। इससे उसके हृदय में भक्ति की भावनाएँ जाग उठीं और आनंद की लहरें उठ खड़ी हुई।)

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का दर्शन

इसके बाद टैक्सी द्वारा नागेश्वर महादेव ज्योतिर्लिंग पहुँचा। यहाँ भगवान शिव स्वयं लिंग रूप में विराजते हैं — जहाँ एक बार एक भक्त ने राक्षस दरुका से रक्षा के लिए शिव का आह्वान किया था, और शिव स्वयं प्रकट हुए थे। यह भगवान शिव के बारह प्रमुख ज्योतिर्लिंगों में से एक है। मंदिर परिसर विशाल था। ऐसा लग रहा था जैसे स्वयं अनंतता एक आकार ले कर मेरे सामने खड़ी हो। शिवलिंग के दर्शन करते हुए लगा — समस्त संसार का केंद्र बिंदु बस यहीं है।

‘शिवोऽहम्, शिवोऽहम्’ — (मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।)

होटल वापसी और द्वारका के बाजार की सैर

पूरा दिन आध्यात्मिक ऊर्जा में डूबा रहा। शाम को होटल लौटा — थकावट के बावजूद आत्मा प्रफुल्लित थी। थोड़ी देर विश्राम किया और फिर निकला द्वारका के स्थानीय बाजार में। कुछ रुद्राक्ष की मालाएँ खरीदीं, भगवान द्वारकाधीश के सुंदर चित्र लिए, और कुछ स्थानीय हस्तशिल्प के सामान भी खरीदे। ये सभी स्मृति के रूप में मेरी आत्मा की भीतरी दीवारों पर हमेशा के लिए टंग जाएँगे। बाजार की जीवंतता और स्थानीय संस्कृति का अनुभव करना भी एक आनंददायक स्मृति के रूप में अंतर्मन में सदैव रहेंगी।





द्वारका से सोमनाथ — रात की ट्रेन यात्रा

रात को द्वारका से वेरावल (सोमनाथ) के लिए ट्रेन पकड़ी। ट्रेन में बैठते ही गहरी नींद आ गई — शायद इसलिए क्योंकि आत्मा तृप्त थी।

सुबह वेरावल स्टेशन पर पहुँचा। टैक्सी ली और सीधे होटल चला गया — जो सोमनाथ मंदिर से कुछ ही दूरी पर था।

सोमनाथ महादेव के दर्शन और अस्तित्व का अनुभव

त्वरित स्नान कर मंदिर की ओर बढ़ा। ब्रह्म मुहूर्त का समय था — चाँदनी छंटी थी, और हवा में समुद्र की नमी थी। सोमनाथ मंदिर का प्रथम दर्शन — मन स्तब्ध रह गया। सागर की शक्तिशाली लहरें मंदिर की प्राचीन बाह्य दीवारों को आदरपूर्वक चूम रही थीं, मानो वे स्वयं भगवान शिव को प्रणाम कर रही हों। यह वही मंदिर था जिसे इतिहास में इस्लामी आक्रमणकारियों ने 17 बार तोड़ा था — पर हर बार यह फिर खड़ा हुआ — सनातन धर्म की अमरता का प्रतीक बन कर। जब मैं गर्भगृह में भगवान सोमनाथ महादेव के समक्ष पहुँचा, तो मेरे सामने जीवन का गहरा रहस्य खड़ा था।

‘वह जो खोजता है वह स्वयं खो जाता है, और जो खो जाता है, वही उसे पा लेता है।’

भगवान शिव के पवित्र सानिध्य में मुझे अपने अस्तित्व की क्षणभंगुरता का गहरा अनुभव हुआ। वहीं समुद्र किनारे

खड़े होकर अस्तित्व का गहन बोध हुआ — सृष्टि, जीवन, मृत्यु, पुनर्जन्म — सब प्रश्न हवा में तैरते प्रतीत हो रहे थे। मैंने श्रद्धापूर्वक प्रसाद ग्रहण किया और कुछ तस्वीरें भी लीं, लेकिन मेरा मन पूरी तरह से मौन था, एक ऐसी शांति से भरा हुआ, जिसे शब्दों में व्यक्त करना असंभव है।

सोमनाथ में अन्य तीर्थ स्थल दर्शन

मंदिर से निकलने के बाद कई अन्य तीर्थ स्थलों के भी दर्शन किए: त्रिवेणी संगम घाट, जहाँ तीन पवित्र नदियाँ मिलती हैं; भालका तीर्थ, वह पावन स्थान जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अपने सांसारिक जीवन का त्याग किया था; और गीता मंदिर, जो भगवत गीता के उपदेशों को समर्पित है। प्रत्येक स्थान का अपना एक अलग आध्यात्मिक कंपन था, एक विशेष प्रकार का भाव था। स्थानीय बाजार से मैंने कुछ और स्मृतियाँ खरीदीं — सोमनाथ मंदिर का एक छोटा सा मॉडल, कुछ रंगीन चूड़ियाँ, और मिट्टी के पारंपरिक दीपक। गुजराती थाली का स्वाद भी लिया — ढोकला, खांडवी, थेपला और मीठी श्रीखंड से मन और पेट दोनों तृप्त हो गए।

यात्रा का गहरा भाव और निष्कर्ष

कभी-कभी भटकना भी एक प्रकार की साधना हो सकती है। यह यात्रा मात्र स्थलों की सैर नहीं थी — यह आत्मा की एक आंतरिक यात्रा थी। कृष्ण के प्रेम और शिव के मौन का मिलन — जीवन को नया दृष्टिकोण दे गया। इन्हीं सीखों के साथ रात में, मैंने कर्णावती के लिए ट्रेन ली जहाँ से मुझे गुवाहाटी लौटने से पहले एक अन्य वृहत आध्यात्मिक यात्रा पर निकलना था, जिसकी कहानी कभी और। मेरे मन में पहले से ही अगली आध्यात्मिक यात्राओं की योजनाएँ बनने लगी थीं।

‘जिन्होंने यात्रा की, वे जानते हैं कि मृत्यु एक द्वार है, जीवन एक सड़क — और आत्मा बस एक यात्री।’ □

एक पेड़ की मौत



श्री तपजीत दत्ता
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



मानव पेड़ के पास खड़ा था और शायद वह कुछ सोच रहा था। यह पेड़ उसके पिता की जमीन पर लगाया गया था, जहाँ उनके दादा ने असम-टाइप एक छोटा सा घर बनाया था। उन्होंने अपनी माँ से सुना था कि यह पेड़ उनके दादा के समय का था या शायद उससे भी पुराना था। मानव ने अपने बचपन का अधिकांश समय अपने भाइयों और बहनों के साथ पेड़ के चारों ओर खेलते हुए बिताया था। उसे लगता था कि पेड़ भी उनके साथ उन पलों का आनंद लेता है, और वे हमेशा पेड़ के चारों ओर बैठे और उड़ते हुए विभिन्न प्रकार के पक्षियों और रंगों को देखने के लिए उत्सुक रहते थे, जो आस-पास और दूर से आते थे। जब भी उसके माता-पिता उसे डाँटते थे, तो वह उनसे छिपने के लिए पेड़ के पास भागता था।

वह उस भयानक दिन को याद करता है जब बहुत बारिश हुई थी, तूफान ने घर की छत को उड़ा दिया था जो टिन से बनी थी और उस रात उसके परिवार को आश्रय के लिए

असहाय बना दिया था। उसके पिता उस समय उनके पूरे परिवार को सुरक्षित आश्रय के लिए पेड़ के नीचे ले गए। जब भी खाना पकाने के लिए ईंधन की कमी होती थी तो उनकी माँ पेड़ की सूखी टहनियों और पेड़ की छाल की मदद से खाना बनाती थीं।

मानव के बेटे नवीन ने कहा, 'पापा, क्या आप कृपया एक तरफ हट सकते हैं, मजदूर पेड़ काटने का इंतजार कर रहे हैं।' जैसे ही वास्तविकता सामने आई, अचानक मानव का ध्यान टूट गया। उसके इंजीनियर बेटे ने जमीन के इस टुकड़े पर एक फ्लैट बनाने की योजना बनाई है, जिसके लिए पेड़ को काटने की जरूरत है। जमीन को अब पूरी तरह से आधुनिक भूखंड के लिए सुसज्जित किया जाना था, जिसके लिए सभी प्राकृतिक पौधों और पेड़ों को काटा जाना था, छोटी लताओं और झाड़ियों को साफ किया जाना था। अचानक मानव ने देखा कि पूरा पेड़ काला हो गया है, सभी सुंदर और रंगीन पक्षी उड़ गए हैं, और अब यह पेड़ बदल गया है। 'अरे! वे सभी पक्षी कहाँ हैं जिन्हें मैं देखने के लिए दौड़ता था?' मानव ने पेड़ से पूछा- इससे पहले कि वह पेड़ से किसी जवाब की उम्मीद कर पाता, मजदूरों ने उसे काटना शुरू कर दिया। मानव पेड़ की ओर भागा और उसे कटने से बचाने के लिए उसे गले लगा लिया।

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। पेड़ की मौत हो चुकी थी। □

शिक्षा



सुश्री सुमायरा

सुपुत्री- मो. शमीम अहमद, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संस्कृत में एक कहावत है “विद्या धनं सर्व धनं प्रधानम्”। अर्थात् विद्या सभी प्रकार के धनों में श्रेष्ठ है या यों कहें कि विद्या ही सबसे प्रधान धन है। विद्या, जिसे हम शिक्षा भी कह सकते हैं, एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक बच्चा ज्ञान, अनुभव, कौशल तथा नजरिया प्राप्त करता है। शिक्षा हमें शिष्ट, अनुशासित और एक बेहतर मनुष्य बनाती है। यह हमें हर परिस्थिति में उत्तम बनाती है। शिक्षा हमें बेहतर बनाने के साथ हमारे जीवन को स्थिरता प्रदान करती है। यह हमारे आत्मविश्वास और विश्वसनीयता को बढ़ाती है। यह हमें सही निर्णय लेने में भी मदद करती है। शिक्षा हमें अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करना सिखाती है। शिक्षा हमारे जीवन में सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा लोगों के अन्दर नैतिकता और सदाचार विकसित करने के साथ ही साथ उन्हें जिम्मेदार नागरिक भी बनाती है। अतः जैसा कि कहा जाता है, “विद्या धनं सर्व धनं प्रधानम्”, अपने बच्चों को और कुछ दें न दें, शिक्षा का धन जरूर प्रदान करें। □

गाँव-ब्याह



श्री सत्येन्द्र पाण्डेय

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पहले गाँव में न टेंट हाऊस थे और न ही केटरिंग, लेकिन थी तो बस सामाजिकता। गाँव में जब कोई शादी-ब्याह होते तो घर-घर से चारपाई, थरिया, लोटा, कलछुल, कराही सहित कई अन्य आवश्यक वस्तुएँ इकट्ठा की जाती थीं और गाँव की ही महिलाएँ एकत्र हो कर खाना बना देती थीं। एकत्र महिलाएँ ही दुल्हन को तैयार करने के साथ-साथ प्रत्येक रस्मानुसार गीत-गौनई वगैरह भी खुद ही गा देती थीं। गीत गाती जातीं और अपना काम करती रहतीं। गाँव के सभी प्रभावशाली लोग पूरे दिन काम करने के लिए इकट्ठे रहते थे। हँसी-ठिठोली के साथ-साथ समारोह का कामकाज भी चलता रहता था और गाँव के लोग बारातियों के खाने से पहले खाना नहीं खाते थे क्योंकि यह घरातियों के साथ-साथ गाँव की इज्जत का सवाल होता था। उस समय गाँव में सामाजिकता के साथ समरसता होती थी। □

देवदूत



सुश्री रत्ना जोयारदार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हम यह सुनते आए हैं कि डॉक्टर भगवान का रूप होते हैं। हमने डॉक्टरों को भगवान का दर्जा दिया है, और क्यों न दें? जैसे भगवान हमें जीवन दे सकते हैं, वैसे ही डॉक्टर भी हमें नया जीवन दे सकते हैं। डॉक्टर न केवल हमें जीवन देता है बल्कि हमारी गंभीर बीमारियों को भी ठीक करता है और हमें फिर से जीने की नई दिशा प्रदान करता है। न केवल शारीरिक बीमारियों बल्कि मानसिक बीमारियों का भी इलाज करके जीने का पथ सुगम कर देता है। मैंने कभी भगवान को देखा नहीं लेकिन मैं डॉक्टरों को ही देवदूत मानती हूँ। यदि हम किसी अस्पताल में जाते हैं, तो हमें पता चलता है कि जीने के लिए हम डॉक्टरों पर कितने निर्भर हैं। मेरा मानना है कि जीवन में रोटी, कपड़ा और मकान के बाद, हमारी प्राथमिक आवश्यकता चिकित्सा है। यह विवादास्पद हो सकता है क्योंकि हर कोई इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होगा। उन लोगों की प्राथमिक आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान के बाद शिक्षा हो सकती है। उन लोगों के पास अपने-अपने तर्क जरूर होंगे। मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहती कि चिकित्सा पहले आनी चाहिए या शिक्षा। मैं आप सभी के साथ कुछ बातें साझा करना चाहती हूँ जो मैंने कुछ दिन पहले डॉक्टरों के संबंध में अनुभव की।

मेरी हड्डियाँ चार बार टूटने के बाद, डॉक्टर ने मुझे अस्थि घनत्व परीक्षण (बोन डेंसिटी टेस्ट) कराने की सलाह दी। चूँकि वार्षिक निष्पादन मूल्यांकन रिपोर्ट (एपीएआर) के

लिए वर्ष में एक बार पूर्ण चिकित्सा जाँच की आवश्यकता होती है, इसलिए मैंने चिकित्सा जाँच के दौरान बोन डेंसिटी टेस्ट करवाने का निर्णय लिया। इस योजना के अनुसार मैंने समस्त टेस्ट करवा लिया। बोन डेंसिटी टेस्ट में बोन डेंसिटी थोड़ी कम पाई गई। हड्डी की इस स्थिति को ऑस्टियोपीनिया कहा जाता है। ऑस्टियोपीनिया हड्डियों के घनत्व में कमी है, जो एक चेतावनी संकेत है कि भविष्य में यह ऑस्टियोपोरोसिस में बदल सकता है। यह पचास वर्ष से अधिक आयु के वयस्कों में आम है। सावधानीपूर्वक उपचार से ऑस्टियोपीनिया को ठीक किया जा सकता है। पिछले साल मेरे दाहिने कंधे के जोड़ की हड्डी टूट गयी थी और उसे ठीक करने के लिए दो स्क्रू लगाने पड़े थे। व्यायाम जारी है, लेकिन पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हुआ है। जब मैं अपना हाथ ऊपर उठाती हूँ तो मुझे थोड़ा दर्द का अनुभव होता है। मैंने सोचा कि मुझे अपने हाथ और हड्डियों के घनत्व के बारे में किसी हड्डी रोग विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए। इसलिए सीजीएचएस लाभार्थी होने के नाते, मैं सीजीएचएस सूचीबद्ध निजी अस्पताल में गई और एक हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर से परामर्श लिया। रिपोर्ट देखने के बाद डॉक्टर ने मुझे अपने दाहिने कंधे का एक्स-रे कराने को कहा और हड्डी के घनत्व के लिए इंजेक्शन लेने की सलाह दी। हर छह महीने में एक इंजेक्शन लगवाना होगा और इसके लिए हर बार इक्कीस हजार रुपये देने होंगे। डॉक्टर ने साफ कह दिया 'अगर आप

सी.जी.एच.एस. से इंजेक्शन वाली दवा लाएँगे, तो मैं इंजेक्शन नहीं लगाऊँगी। आपको मुझसे इंजेक्शन लेना होगा और इसके लिए इक्कीस हजार रुपए देने होंगे।’

डॉक्टर के चेंबर से बाहर आकर मैंने सोचा कि क्यों न किसी दूसरे ऑर्थोपेडिक डॉक्टर से सलाह ली जाए। इसलिए मैं एक और सीजीएचएस लिस्टेड प्राइवेट अस्पताल गयी और एक दूसरे ऑर्थोपेडिक डॉक्टर से सलाह ली। उन्होंने मुझे अपने दाहिने कंधे का एक्स-रे कराने को कहा। एक्स-रे रिपोर्ट देखने के बाद, उन्होंने बताया कि जब मैं अपना हाथ ऊपर उठाती हूँ, तो मेरे हाथ में लगे दोनों स्कू हड्डी से बाहर निकल रहे हैं, मुझे तुरंत स्कू निकालने होंगे। डॉक्टर ने कहा, ‘मुझे डर है कि इस स्कू से आपकी नस क्षतिग्रस्त हो गई है। स्कू के कारण अभी एमआरआई से नस की स्थिति का पता नहीं चल पाएगा। स्कू निकालने के बाद, नस की स्थिति जानने के लिए एमआरआई किया जाएगा। आपको जल्द से जल्द सर्जरी करवानी होगी। सर्जरी ज्यादा मुश्किल नहीं है, आपको भर्ती होने की भी जरूरत नहीं है, आपको उसी दिन छुट्टी मिल जाएगी, बस दो छेद करने होंगे और दोनों स्कू निकाल देने होंगे। आप अगले ही दिन अपनी सामान्य ज़िंदगी में लौट पाएँगी, लेकिन मैं सीजीएचएस दरों पर सर्जरी नहीं करूँगा, आपको इसके लिए साठ हजार रुपये देने होंगे। अब बताइए कि आप सर्जरी कब करवाना चाहती हैं। मेरा यह फोन नंबर रख लीजिए और सर्जरी से पहले मुझे फोन करके बता दीजिए।’ फिर उन्होंने मुझे प्रेसक्रिप्शन पकड़ा दिया। साठ हजार रुपये के ख्वाब में डॉक्टर मुझे हड्डियों के घनत्व के इलाज के बारे में बताना ही भूल गए। फिर मेरे कहने पर डॉक्टर ने हड्डियों के घनत्व के लिए कुछ दवा लिखी। मैं निराश होकर घर लौट आई। मैं बहुत उदास थी। मैं पिछली सर्जरी से अभी तक पूरी तरह से उबर भी नहीं पाई थी अब एक और सर्जरी के ख्याल से ही मैं बेचैन हो गई। कुछ भी ठीक नहीं लग रहा था, रात की नींद गायब हो चुकी थी। मैं मायूस थी और सोच रही थी कि क्या करूँ, तभी एक विचार मेरे दिमाग में बिजली की

तरह चमका। यदि सर्जरी की लागत साठ हजार रुपये है और सर्जरी सीजीएचएस दरों पर उपलब्ध नहीं है, तो बेहतर होगा कि सर्जरी सीजीएचएस के बाहर किसी अच्छे डॉक्टर से करवा ली जाए।

इसी विचार के आधार पर मैंने अपने एक रिश्तेदार को फोन किया, जो गुवाहाटी में एक फार्मा कंपनी में एरिया मैनेजर के पद पर काम करते हैं। मैंने उनसे पूछा कि गुवाहाटी में सबसे अच्छा ऑर्थोपेडिक डॉक्टर कौन है? उन्होंने मुझे तीन डॉक्टरों के नाम बताए। मैंने सबसे अच्छे डॉक्टर से सलाह लेने का फैसला किया। सोच के मुताबिक मैं उस अस्पताल में गई जहाँ वे प्रैक्टिस करते हैं। मुझे जल्दी आने को कहा गया, वरना डॉक्टर चले गए होते। अस्पताल जाकर देखा तो डॉक्टर अपने चेंबर में आए ही नहीं थे। एक जूनियर डॉक्टर ने मेरी सारी रिपोर्ट देखी और पूछा कि मैं डॉक्टर के पास क्यों आई हूँ। मैंने उन्हें अपने दाहिने हाथ और हड्डियों के घनत्व के बारे में बताया। तीन घंटे इंतजार करने के बाद डॉक्टर आए, एक नर्स मेरे पास आई और मुझे एक घर में ले गई। जब हम जूते खरीदने जाते हैं, तो हमारे पैरों का नाप लेने के लिए एक यंत्र का इस्तेमाल किया जाता है। मुझे भी ऐसे ही एक यंत्र पर अपने पैर रखने को कहा गया। मैं सोचने लगी कि डॉक्टर से मिलने से पहले हमारा वजन, ऊँचाई, रक्तचाप आदि तो जाँचा जाता है, लेकिन क्या आजकल पैरों का नाप लेना भी जरूरी हो गया है? वहाँ पैर रखने के बाद मेरे पैरों पर स्प्रे छिड़का गया और एक बटन दबाया गया, मशीन से एक पर्ची निकली, नर्स ने मुझे पर्ची दी और कहा कि रिसेप्शन पर जाकर रिपोर्ट ले लीजिए। मैं रिसेप्शन पर गई और मैंने पूछा, ‘कौन सी रिपोर्ट?’ रिसेप्शनिस्ट ने कहा, ‘बोन मिनिरल डेंसिटी टेस्ट का रिपोर्ट।’ मैंने कहा, ‘मेरे पास पूरे शरीर की बोन डेंसिटी टेस्ट की रिपोर्ट है, वो भी 20 दिन पहले की। क्या 20 दिन बाद रिपोर्ट बदल जाएगी? क्या हमारे पैसे पेड़ों पर उगते हैं?’ उन्होंने मुझसे कहा कि आपको पहले ही बता देना चाहिए था। मैंने कहा कि ‘मैंने जूनियर डॉक्टर को सारी रिपोर्ट दिखा दी है,

अब उन्हें और किस तरह से बताऊँ? क्या कोई भी टेस्ट करने से पहले आप लोगों को मुझे बताने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई? क्या टेस्ट कराने से पहले सहमति की आवश्यकता नहीं है? मेरे पास टेस्ट कराने के लिए पैसे हैं या नहीं, यह भी महत्वपूर्ण है। आप किसी को टेस्ट कराने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। मेरी बात सुनकर उन्होंने कहा कि ठीक है, आपको रिपोर्ट लेने की जरूरत नहीं है। आप डॉक्टर के पास जा सकते हैं। मैं डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर ने बोन डेंसिटी टेस्ट की रिपोर्ट देखी और कुछ दवाएँ लिखीं। फिर मैंने डॉक्टर को एक्स-रे रिपोर्ट दिखाई और पूछा कि क्या मेरे हाथ में लगा स्कू ठीक है? उन्होंने कहा, 'बिल्कुल ठीक है।' मैंने पूछा कि क्या स्कू निकालना जरूरी है? डॉक्टर ने कहा, 'आप चाहें तो निकाल सकते हैं, लेकिन जल्दबाजी करने की कोई जरूरत नहीं है, आपका स्कू टाइटेनियम का बना है, इसलिए कोई दिक्कत नहीं है।' फिर मैंने पूछा, 'लेकिन मेरे हाथ में दर्द क्यों हो रहा है?' डॉक्टर ने कहा, 'व्यायाम करते रहिए, सब ठीक हो जाएगा।' डॉक्टर ने मुझसे पूछा कि क्या दाहिनी करवट सोने से दर्द होता है? मैंने कहा, 'हाँ।' डॉक्टर ने कहा, 'एक काम कीजिए, आपके दाहिने हाथ की मांसपेशी में एक इंजेक्शन लीजिए, इससे आपका दर्द कम हो जाएगा।' मैंने कहा, 'ठीक है।' डॉक्टर ने मेरा प्रेसक्रिप्शन एक नर्स को थमा दिया। मैं नर्स के पीछे-पीछे डॉक्टर के चेंबर से बाहर निकल आई। नर्स मुझे दवाइयों से भरे एक कमरे में ले गई और तुरंत प्रेसक्रिप्शन के मुताबिक दवाइयाँ निकालने लगी। मैंने उसे रोका और कहा, 'मुझे दवा की जरूरत नहीं है, मैं इसे सीजीएचएस से ले लूंगी।' पता नहीं नर्स को सीजीएचएस के बारे में क्या समझ आया। उसने कहा, 'आप दवा हमसे क्यों नहीं खरीदते? आपको पैसे वहाँ भी तो देने होंगे।' मैंने कहा, 'वहाँ मुझे मुफ्त में दवा मिल जाएगी, तो मैं पैसे क्यों खर्च करूँ?' तब उन्होंने कहा, 'इंजेक्शन के लिए आपको 2500 रुपए जमा करने होंगे।' मैंने उनसे पूछा कि इंजेक्शन का नाम क्या है। प्रेसक्रिप्शन पर कुछ लिखा नहीं था। उसने कहा कि डॉक्टर इंजेक्शन देते समय

प्रेसक्रिप्शन पर नाम लिखेंगे। मैंने कहा, 'अगर दवा का नाम लिखा होता तो मैं उसे सीजीएचएस से ले लेती।' उन्होंने कहा, 'दवा महंगी नहीं है, इंजेक्शन लगाने का शुल्क महंगा है।' मैंने कहा, 'फिर भी, नाम जानना महत्वपूर्ण है क्योंकि मुझे यह जानने का पूरा अधिकार है कि मुझे कौन सा इंजेक्शन दिया जा रहा है।' मैंने इंजेक्शन लेने से इनकार कर दिया। इसी बीच नर्स के मुँह से दवा का नाम एक बार निकल गया था। मैंने गूगल पर सर्च किया तो पता चला कि उस दवा की कीमत महज 150 रुपए है। फिर नर्स ने मुझे फिजियोथेरेपी के पैसे जमा करने को कहा। अब मैं इतना थक गई थी कि मैंने वहाँ से यह कह कर प्रस्थान कर लिया कि मैं अगले दिन पुनः आऊँगी।

मैं घर लौट आई और राहत की साँस ली कि मेरे हाथ का स्कू ठीक है। फिर भी मैं किसी और एक अच्छे डॉक्टर से सलाह लेना चाहती थी। अगले दिन मैं दूसरे अस्पताल गई जहाँ दूसरे डॉक्टर प्रैक्टिस करते हैं। सारी रिपोर्ट देखने के बाद इस डॉक्टर ने वही बात दोहराई जो तीसरे डॉक्टर ने कहा था - 'हाथ में लगा स्कू ठीक है और उसे निकालने में जल्दबाजी करने की जरूरत नहीं है। स्कू टाइटेनियम का बना है, इसलिए कोई दिक्कत नहीं है। दर्द के लिए आपको व्यायाम जारी रखना होगा।' डॉक्टर ने अस्थि घनत्व परीक्षण रिपोर्ट देखी और पूछा, 'क्या आपने अपनी कमर का एक्स-रे कराया है?' मैंने कहा, 'नहीं।' डॉक्टर ने कहा, 'आप कल एक्स-रे रिपोर्ट लेकर आएँ।' अगले दिन मैं रिपोर्ट लेकर डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर ने रिपोर्ट देखी और मुझे बारीकी से समझाया कि एक्स-रे रिपोर्ट पर दिखाई देने वाली हल्की और पतली रेखाओं से हड्डियों का घनत्व कैसे पता लगाया जा सकता है। और यह रेखा दर्शाती है कि हड्डियों का घनत्व स्वाभाविक है। यह जानने के बाद ऐसा लगा जैसे मेरे सिर से बोझ उतर गया हो। डॉक्टर ने मुझे कुछ नियमों का पालन करने को कहा, फिर मैं वहाँ से वापस आ गई। अंततः मैंने एक डॉक्टर के रूप में एक देवदूत को देखा। □

डॉ. श्रीकांत जिचकर - ज्ञान और नेतृत्व का अविस्मरणीय संगम



श्री श्रीकांत लाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



भारत भूमि ने अनेक ऐसे व्यक्तित्व दिए हैं जिन्होंने शिक्षा, राजनीति और समाज सेवा के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी है। उन्हीं में से एक नाम है डॉ. श्रीकांत जिचकर, जिन्हें उनके बहुआयामी जीवन, असाधारण शैक्षणिक उपलब्धियों और सार्वजनिक सेवा के लिए आज भी याद किया जाता है।

डॉ. श्रीकांत जिचकर का जन्म 14 सितम्बर 1954 को महाराष्ट्र के नागपुर जिले के काटोल तहसील के आजागाँव (या

आजमगाँव) नामक गाँव में एक किसान परिवार में हुआ था। बचपन से ही उनमें अध्ययन के प्रति गहरा रुझान था और उनका परिवार भी उनके दृष्टिकोण और महत्वाकांक्षाओं में सहायक रहा। वे बचपन से ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे। उनकी जिज्ञासा, लगन और अथक परिश्रम ने उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय बनाया।

1973 से 1990 तक उन्होंने कुल 42 विश्वविद्यालयी परीक्षाएँ दे कर 20 डिग्रियाँ सफलतापूर्वक प्राप्त कीं। इनमें अधिकतर विषयों में प्रथम श्रेणी व कई स्वर्ण पदक भी शामिल थे। प्राप्त डिग्रियों में प्रमुख रूप से शामिल हैं— MBBS, MD (चिकित्सा), LL.B., LL.M. (अंतर्राष्ट्रीय कानून सहित), MBA, DBM (व्यवसाय प्रबंधन), पत्रकारिता में स्नातक, कई M.A. डिग्रियाँ (लोक प्रशासन, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, संस्कृत, इतिहास, अंग्रेजी साहित्य, दर्शन, राजनीति विज्ञान, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व, मनोविज्ञान), D. Litt. (संस्कृत में डॉक्टरेट)।

इनके सम्मान में, Limca Book of Records में उन्हें “भारत के सबसे योग्य व्यक्ति” के रूप में दर्ज किया गया है। उनकी गिनती भारत के सबसे पढ़े-लिखे व्यक्तियों में होती है।

1978 में UPSC परीक्षा पास कर वे भारतीय पुलिस सेवा (IPS) में चयनित हुए, लेकिन 1980 तक वे आईएएस (IAS) की परीक्षा पुनः पास कर वहाँ शामिल हुए। आईएएस

अधिकारी बनने के केवल चार माह बाद उन्होंने इस्तीफा देकर राजनीति में कदम रखा। 1980 में महज 25-26 वर्ष की उम्र में वे महाराष्ट्र विधानसभा के सबसे युवा विधायक (MLA) बने। इसके बाद वे महाराष्ट्र विधान परिषद (MLC) के सदस्य (1986-1992), राज्यसभा सांसद (1992-1998) और कई महत्वपूर्ण मंत्रिमंडल विभागों में राज्य मंत्री भी रहे — एक समय वे 14 विभागों के प्रभारी थे।

डॉ. जिचकर ने सँदीपानी स्कूल, नागपुर की स्थापना की, जो एक समग्र शिक्षा का आदर्श मॉडल था — जहाँ स्व-शिक्षा, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों पर जोर रहता था। कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और विश्वविद्यालय के प्रथम कैंपस चांसलर भी रहे। वे एक पुस्तक प्रेमी थे; उनका निजी पुस्तकालय लगभग 52,000 पुस्तकों के संग्रह से भरा था। जिचकर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे लेखक, वक्ता और विचारक भी थे। वे छात्र संगठन (Nagpur University Students' Council) के अध्यक्ष भी रहे। वे एक पेशेवर फोटोग्राफर, स्टेज अभिनेता, चित्रकार, भाषणदाता, और सांस्कृतिक आयोजक भी थे। उन्होंने हजारों पुस्तकें एकत्रित की थीं और उनका निजी पुस्तकालय भारत के सबसे बड़े निजी पुस्तकालयों में से एक था। वे भारतीय संस्कृति, दर्शन

और धर्म के गहन अध्येता थे। उनकी विद्वता का प्रभाव न केवल राजनीति में, बल्कि शिक्षा जगत और समाज सेवा में भी दिखाई देता है।

डॉ. जिचकर का आकस्मिक निधन 2 जून 2004 को नागपुर के पास एक सड़क दुर्घटना में हुआ, जब वे मात्र 49 वर्ष के थे। उनके निधन से भारत ने एक अद्वितीय विद्वान, न्यायप्रिय नेता और शिक्षा के पैरोकार को खो दिया, लेकिन उनकी विरासत आज भी कई युवा और विद्वानों के लिए प्रेरणा बनी हुई है।

डॉ. श्रीकांत जिचकर का जीवन हमें यह सिखाता है कि ज्ञान का अन्वेषण सीमाओं से परे होता है — चाहे वह चिकित्सा हो, कानून हो, प्रबंधन हो या राजनीति और संस्कृति— सभी क्षेत्रों में उन्होंने उत्कृष्टता हासिल की।

उनकी नैतिक दृष्टि, अनुशासन, समय प्रबंधन और समाज सेवा की भावना आज भी लाखों युवाओं के लिए उज्ज्वल आदर्श हैं।

डॉ. श्रीकांत जिचकर का जीवन ज्ञान, परिश्रम और समाजसेवा का आदर्श है। वे इस बात के प्रतीक हैं कि यदि मनुष्य में जिज्ञासा और लगन हो तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। उनकी बहुमुखी प्रतिभा और शिक्षा के प्रति समर्पण आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा। ■

“राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ और गहरा संबंध है।” – डॉ.राजेन्द्र प्रसाद

“हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।” – स्वामी दयानंद

“राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।” – महात्मा गांधी

ऑडिट दिवस 2024 की कुछ झलकियाँ



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस



कार्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की कुछ झलकियाँ



अंतर-क्षेत्रीय कैरम टूर्नामेंट 2024-25



नीलांचल की देवी



श्री सन्नी राज
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कामरूप की रानी, शक्ति की अविरल धारा,
माँ कामाख्या का वास जहाँ, होता वहाँ चमत्कार सारा।
नीलांचल की पर्वत माला, सुरम्य उसका रूप,
गुवाहाटी की गोद में बसी, माँ देती सबको स्वरूप।

ब्रह्मपुत्र के तट पर बसी, शांति की जो मिसाल,
जहाँ श्रद्धा में डूबे भक्त, करते माँ को नमन हर साल।
ना है वहाँ भव्य सोने का सिंहासन, ना ही चाँदी का दरबार,
पर जो माँ का दर्शन पाए, उसका कष्ट कट जाए हर बार।

मनोकामना पूर्ण होती है, बस सच्चे मन से जो आए,
माँ के चरणों में जो झुके, वो भवसागर से तर जाए।
भारत की हर साँस में, माँ की गूँज सुनाई दे,
हर सुबह की आरती में, भक्ति की ज्वाला दिखाई दे।

जय माँ कामाख्या! शक्ति स्वरूपा! देवी महान!
तेरे चरणों में सदा रहे, मेरा दिल, मेरा ध्यान
तेरा ही सहारा है, जीवन की इस डगर में,
माँ तू ही है ज्योति, हर अंधेरे सफर में।

चिंटू



श्री दीपक जोशी
कनिष्ठ अनुवादक

चिंटू था एक प्यारा बच्चा,
पर फोन का था उसको पक्का चस्का।
सुबह-शाम बस उस पर झुका,
बाहर खेलना उसका था छूटा।
मम्मी बोलें, 'धूप ले ले',
पापा बोलें, 'किताबें पढ़ ले।'।
पर चिंटू तो अपनी धुन में मगन,
मानो फोन ही है उसका जीवन।
एक दिन गिरा फोन जमीन पर,
स्क्रीन टूटी, दर्द था भीतर।
चिंटू रोया, मन उदास,
खो गया जैसे सारा विश्वास।
बिना फोन के बोर हुआ,
घर से बाहर निकला, तो होश हुआ।
देखा दोस्त, खेला क्रिकेट,
काश मिल जाए बस थोड़ा इंटरनेट।
धूप सुनहरी, हवा ताजी,
असली दुनिया थी कितनी राजी।
हँसा, दौड़ा, खूब खेला,

फोन से चिंटू जो दूर चला।
मम्मी-पापा हुए हैरान,
चिंटू बदला, पाया ज्ञान।
बोला, 'माँ, पकौड़े खाऊँगा आज,'
'पापा, पढ़ूँगा मैं किताब का राज।'।
फोन है अच्छा, पर ध्यान रहे,
ज्यादा हो तो नुकसान करे।
जीवन असली है बाहर यारा,
फोन तो है बस एक सहारा। □



भाषा



श्री ओम प्रकाश उपाध्याय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भाषा प्रेम की धारा के रूप में हृदय में बहती है।
शब्दों की वर्षा के रूप में आत्मा को भिगोती है॥
भाषा की शक्ति, शब्दों का जादू है।
विचारों को बदलती, जीवन को सँवारती है॥
आओ, भाषा प्रेम को बढ़ावा दें, शब्दों की शक्ति को पहचानें।
भाषा की मिठास को महसूस करें, और शब्दों के जादू से जीवन को सजाएँ॥
कोई भी भाषा बोलो, बोलो शान से।
पर हिंदी भाषा को मत धकेलो अपमान से॥
हिंदी कोई भाषा नहीं, ये तो आत्मा है भारत की।
जिसमें बसी हैं धड़कनें, हर गाँव, हर पनघट की॥
हिंदी भाषा एकता का सूत्र है।
संस्कृति का प्रमाण है॥
विरोध करोगे तो भी क्या? हिंदी तो फिर भी बोलेली।
कभी गीत बन के गूँजेगी, कभी क्रांति बन के डोलेली॥
हिंदी किसी की मोहताज नहीं है, ये तो खुद में एक आवाज है।
न झुकती है, न बिकती है, ये तो जन-जन की धड़कन में टिकती है॥
हिंदी, गाँव के कंठ से लेकर मंच के गीतों तक प्रेम की पहचान है।
एकता के साथ हिंदी को अपनाने में ही देश का सम्मान है॥ □



कर्म योग



सुश्री वर्णाली घोष
बहन- सुश्री रत्ना जोयारदार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कर्म ही धर्म, कर्म ही शक्ति, कर्म से भाग्य बने ।
कर्म ही ध्यान, कर्म ही ज्ञान, कर्म से मोक्ष मिले ॥
कर्म के बिना जिया न जाए, कर्म ही सब तय करे ।
कर्म से जीना, कर्म से मरना, ना कोई कर्म से परे ॥
जो भी करना सोच विचारे, बाद में ना पछताए ।
किया काम जो आज है, वही दोगुना वापस आए ॥
अच्छे काम के अच्छे नतीजे, कोई ना बदल पाए ।
बुरे काम के बुरे नतीजे, सदियों से सुनते आए ॥
इतिहास निचोड़ कर देख लो, मिले ना कोई उपाय ।
कोई भी पन्था नहीं है, जिससे नियम तोड़ा जाए ॥
वक्त का काम वक्त में हो, तो बस में दुनिया सारी ।
कर्महीन को न पूछे कोई, कर्म से दुनिया सारी ॥
कर्म ही भक्ति, कर्म ही मुक्ति, कर्म ही योग सारे ।
सत्यनिष्ठा से कर्म करे, वही भगवान को प्यारे ॥



बेटा



सुश्री ज्योति राजखोवा लामा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा बेटा मेरी जान,
तुम्हारे जन्म का दिन आज भी याद है,
एनेस्थेसिया थी, इसलिए मेरी चेतना नहीं थी।
रोने की आवाज तो आई,
लेकिन मैं होश में नहीं थी।

एक तरफ ऑपरेशन का टेबल,
दूसरी तरफ सलाइन की सुई।
बेहोशी में भी थी एक आस,
कब आओगे तुम मेरे पास।
आँखें खुली तो धुंधला सा था सब कुछ,
तुम्हारी एक झलक पाने को था मन उत्सुक।

फिर धीरे धीरे तुम्हें गोद में लिया,
मन में एक अद्भुत आनंद आया
जो व्यक्त न किया गया।
धीरे धीरे तुम बड़े हुए,
और माँ के लाडले बनते गए।

कितनी रातें जाग जाग कर,
रोना बंद कराया, लोरी सुना-सुना कर सुलाया,
हर बीमारी ने डॉक्टर की दहलीज पर भगाया।
बस यही चाह थी कि तुम स्वस्थ रहो,
शिक्षा हो या कराटे हो,
जीवन की हर दौड़ में आगे बढ़ते रहो।
देखते-देखते समय रेत की तरह फिसल गया,

तुम और भी बड़े हुए,
स्कूल की भागा-दौड़ी पर विराम आ गया।
पलक झपकते ही पढ़ने के लिए
विदेश जाने का समय आ गया।

शायद अब माँ की जरूरत नहीं,
खुल गए हैं पंख, और उड़ान भरने का समय आ गया।
अब तुम्हें विदेश की सुन्दरता ने मोह लिया है,
और आहिस्ते-आहिस्ते जैसे माँ को भुला दिया है।
फोन पर आवाज सुनने के लिए इंतजार करती हूँ,
तुम्हारी खबर मिलने की राह देखती हूँ।

विदेश की चकाचौंध में इतना घुल गए हो,
माँ बस इतना पूछना चाहती है,
'क्या तुम ठीक हो? खुश हो?
ठीक से खाते हो?'
माँ तो आज भी गोद में लेना चाहती है,
फिर से पाल-पोसकर बड़ा करना चाहती है।
क्या मेरी यह अस्वाभाविक इच्छा संभव है?

एक दिन तो वापस आओगे,
मेरे अंतिम समय में तो तुम्हें आना ही है,
रोना ही है।
पर तब तक बहुत देर हो जाएगी,
तब कुछ बोलोगे भी,
तो मैं उत्तर नहीं दे पाऊँगी,
पुचकारने के लिए भी उठ न पाऊँगी। □

जीवन-पथ



श्री हंस कुमार तिवारी
लेखापरीक्षक

पा कर खोना, खो कर पाना
समय बचाना सीख रहा हूँ।
गिर कर उठना, उठ कर चलना
जीवन जीना सिख रहा हूँ॥

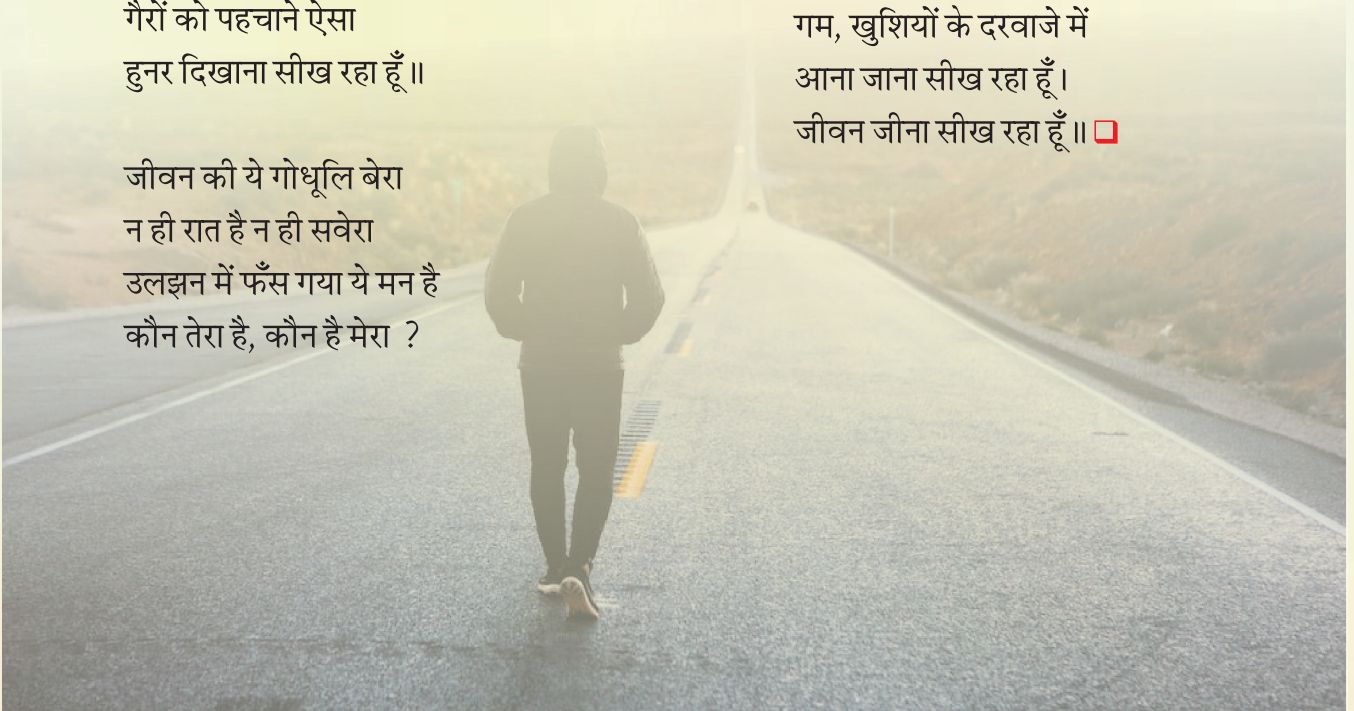
प्रतिबंधों में रिश्ते जकड़े
अपनेपन में हाथ को पकड़े
संबंधों का रूप है बिगड़ा
फिर भी देखकर दर्पण अकड़े
गैरों को पहचाने ऐसा
हुनर दिखाना सीख रहा हूँ॥

जीवन की ये गोधूलि बेरा
न ही रात है न ही सवेरा
उलझन में फँस गया ये मन है
कौन तेरा है, कौन है मेरा ?

आँसू भी बेमोल हुए अब
हँसना, गाना सीख रहा हूँ॥

क्या पता कोई आ जाए
थाली भर खुशियाँ ले आए
रंग सफेदी भरी ये चूनर
आ कर के धानी कर जाए॥

गम, खुशियों के दरवाजे में
आना जाना सीख रहा हूँ।
जीवन जीना सीख रहा हूँ॥ □



गरीबी



सुश्री रत्ना जोयारदार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं समाज के लिए एक बोझ हूँ,
हर कोई मुझसे करता है घृणा।
सम्मान व श्रद्धा की पात्र नहीं,
मेरी प्राप्ति उपेक्षा व अवहेलना।
दूर रहना चाहते हैं मुझसे सभी,
हर एक नागरिक मुझसे है डरता।
गरीबों के घर मुक्त आवागमन,
अमीरों से मेरा न कोई वास्ता।
अर्थव्यवस्था को तहस नहस
करने की अति क्षमता है मुझमें।
कंगाल बनाकर छोड़ती हूँ उसे—
प्रवेश करती हूँ जिसके घर में।
बेनकाब करने की असीम क्षमता—
कूट-कूट कर भरी है मेरे अंदर।
नीयत को उजागर कर सकती हूँ—
बुरे से बुरे वक्त को दर्शा कर।
हमेशा से ही मुझे दूर करने के—
न जाने कितने प्रयास जारी हैं।
मुझे हटाना इतना आसान भी नहीं—
मैं गरीबी, तंगी मेरी पहचान है। ■



बैडमिंटन: एक लोकप्रिय खेल



श्री राणा कुमार बरुआ
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

खेल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। दुनिया में कई खेल लोकप्रिय हैं, लेकिन बैडमिंटन अपनी तेज गति, सरलता और सामरिक खेल शैली के कारण सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाला खेल बन गया है। यह खेल बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक हर आयु वर्ग के लिए उपयुक्त है और इसे घर के पास, पार्क, खेल परिसर या प्रोफेशनल स्तर पर भी खेला जा सकता है। भारत में बैडमिंटन की लोकप्रियता पिछले कुछ दशकों में काफी बढ़ी है। भारतीय खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी सफलता के झंडे गाड़ रहे हैं, जिससे इस खेल के प्रति लोगों की रुचि और बढ़ गई है। बैडमिंटन न केवल प्रतिस्पर्धात्मक खेल के रूप में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह एक बेहतरीन व्यायाम भी है, जो शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से फिट रहने में मदद करता है।

बैडमिंटन का इतिहास

बैडमिंटन की उत्पत्ति का इतिहास काफी पुराना है। ऐसा माना जाता है कि इसका प्रारंभिक रूप भारत में 'पूना' नाम से खेला जाता था, जिसे ब्रिटिश सेना के अधिकारियों ने देखा और इंग्लैंड ले गए। 1873 में इंग्लैंड के बैडमिंटन हॉल में इसे आधिकारिक रूप से नाम दिया गया। इसके बाद, इस खेल को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलने लगी और 1934 में इंटरनेशनल बैडमिंटन फेडरेशन (IBF) की स्थापना हुई।

ओलंपिक खेलों में बैडमिंटन को 1992 में पहली बार शामिल किया गया, और तब से यह खेल विश्वभर में अत्यधिक लोकप्रिय हो गया। भारत में भी बैडमिंटन का विकास तेजी से हुआ और आज यह क्रिकेट के बाद सबसे अधिक पसंद किए जाने वाले खेलों में से एक है।

बैडमिंटन के खेल के नियम

बैडमिंटन एक रैकेट और शटल कॉक से खेला जाने वाला खेल है, जो एक कोर्ट में खेला जाता है। यह खेल व्यक्तिगत (सिंगल्स) और युगल (डबल्स) दोनों रूपों में खेला जाता है।

प्रमुख नियम:

1. खेल 21 अंकों के फॉर्मेट में खेला जाता है, जिसमें प्रत्येक रैली से एक अंक जुड़ता है।
2. यदि स्कोर 20-20 हो जाता है, तो खिलाड़ी को जीतने के लिए दो अंकों की बढ़त लेनी होती है।
3. सर्विस को हमेशा तिरछे (डायगोनल) रूप से मारना होता है।
4. यदि शटल कॉक नेट को छूकर विरोधी कोर्ट में गिरती है, तो इसे सही माना जाता है।
5. एक मैच तीन गेम्स का होता है, और जो खिलाड़ी दो गेम्स जीतता है, वह विजेता घोषित किया जाता है।

बैडमिंटन खेलने के लाभ:

1. शारीरिक फिटनेस में सुधार - बैडमिंटन एक तीव्र गति वाला खेल है, जिसमें खिलाड़ियों को तेजी से दौड़ना,

कूदना और शॉट खेलना पड़ता है। यह शरीर को चुस्त और सक्रिय बनाए रखता है।

2. मानसिक सतर्कता और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता – इस खेल में तेजी से निर्णय लेने की आवश्यकता होती है, जिससे मानसिक सतर्कता और एकाग्रता में वृद्धि होती है।
3. कैलोरी बर्न करने में सहायक – बैडमिंटन खेलने से एक घंटे में लगभग 400-500 कैलोरी तक बर्न हो सकती है, जिससे वजन कम करने में मदद मिलती है।
4. हृदय स्वास्थ्य को बढ़ावा – यह खेल हृदय को स्वस्थ बनाए रखता है और रक्त संचार को बेहतर करता है, जिससे हृदय रोगों का खतरा कम होता है।
5. तनाव और अवसाद कम करता है – बैडमिंटन खेलने से एंडोर्फिन हार्मोन (खुशी का हार्मोन) स्रावित होता है, जिससे तनाव और चिंता कम होती है।
6. टीम वर्क और प्रतिस्पर्धात्मक भावना का विकास – डबल्स मैच खेलने से सहयोग और सामूहिकता की भावना विकसित होती है।
7. सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाता है – इस खेल को दोस्तों, परिवार या सहकर्मियों के साथ खेलकर सामाजिक जुड़ाव को बढ़ाया जा सकता है।

भारत में बैडमिंटन का विकास

भारत में बैडमिंटन का तेजी से विकास हुआ है। कुछ दशक पहले तक यह खेल केवल शौकिया रूप से खेला जाता था, लेकिन अब यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण एक प्रमुख खेल बन गया है।

भारत के कुछ प्रमुख बैडमिंटन खिलाड़ी:

1. प्रकाश पादुकोण – भारत के पहले ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैंपियन।
2. पुलेला गोपीचंद – 2001 में ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैंपियनशिप विजेता।

3. साइना नेहवाल – 2012 ओलंपिक कांस्य पदक विजेता और कई अंतर्राष्ट्रीय खिताब विजेता।
4. पी.वी. सिंधु – 2016 ओलंपिक रजत और 2020 ओलंपिक कांस्य पदक विजेता।
5. किदांबी श्रीकांत – विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप के फाइनलिस्ट।

भारत सरकार और बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया (BAI) इस खेल को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ चला रहे हैं, जिनमें 'खेलो इंडिया' और बैडमिंटन अकादमियाँ शामिल हैं।

बैडमिंटन: एक कार्यालय खेल

आज की व्यस्त जीवनशैली में, जब लोग अधिकतर समय बैठकर काम करते हैं, बैडमिंटन एक बेहतरीन खेल हो सकता है जो कर्मचारियों को सक्रिय और ऊर्जावान बनाए रखता है।

कार्यालयों में बैडमिंटन खेलने के फायदे:

1. कर्मचारियों का स्वास्थ्य और उत्पादकता बढ़ती है।
2. टीम वर्क और आपसी सहयोग को बढ़ावा मिलता है।
3. कार्यस्थल पर तनाव कम करने में मदद करता है।
4. कर्मचारियों के बीच सकारात्मक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है।

कई कंपनियाँ अपने कर्मचारियों के लिए खेल सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं, जिससे न केवल शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है, बल्कि कार्यक्षमता भी बेहतर होती है।

बैडमिंटन सिर्फ एक खेल ही नहीं, बल्कि फिटनेस, मानसिक संतुलन और सामाजिक जुड़ाव का एक बेहतरीन माध्यम है। यह खेल न केवल हमारे स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, बल्कि प्रतिस्पर्धा, अनुशासन और टीम वर्क जैसी जीवन उपयोगी क्षमताएँ भी विकसित करता है। बैडमिंटन का भविष्य उज्ज्वल है, और भारत जैसे देश में इस खेल को और अधिक प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है। यदि हम इस खेल को अपने जीवन का हिस्सा बनाते हैं, तो हम न केवल स्वस्थ रहेंगे, बल्कि आनंद और उत्साह से भरा जीवन भी जी पाएँगे।

हिन्दी सिनेमा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव



श्री अश्वनी कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



हिन्दी सिनेमा, जिसे प्रायः 'बॉलीवुड' के नाम से जाना जाता है, केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में उभरा है। सिनेमा ने जहाँ हिन्दी भाषा को आम जन की भाषा बनाया, वहीं उसने हिन्दी साहित्य को भी व्यापक मंच दिया। किन्तु इस विस्तार की प्रक्रिया में कई बार साहित्य की आत्मा और गहराई भी प्रभावित हुई है। आओ चलो हिन्दी सिनेमा द्वारा हिन्दी साहित्य पर डाले गए सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों की विवेचना उदाहरण सहित करें।

हिन्दी सिनेमा के हिन्दी साहित्य पर सकारात्मक प्रभाव:

1. साहित्यिक कृतियों का फिल्म रूपांतरण हिन्दी सिनेमा ने कई कालजयी हिन्दी साहित्यिक रचनाओं को फिल्म रूप में प्रस्तुत किया है:

- ♦ गोदान (1936) – प्रेमचंद की इस अमर कृति पर आधारित फिल्म (1963) ने ग्रामीण भारत की समस्याओं को पर्दे पर जीवंत किया।
- ♦ गाइड – आर.के.नारायण के उपन्यास पर बनी इस फिल्म (1965) ने आत्मिक यात्रा और समाज से संघर्ष को गहराई से दिखाया।
- ♦ देवदास – शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की इस बांग्ला कृति को हिन्दी में कई बार फिल्माया गया, जिसमें 2002 की संजय लीला भंसाली निर्देशित फिल्म अत्यधिक चर्चित रही।

इन फिल्मों ने उन साहित्यिक रचनाओं को उन लोगों तक पहुँचाया जो पुस्तकें नहीं पढ़ते। इससे साहित्य को जनसामान्य में लोकप्रियता मिली।

2. साहित्यिक अभिव्यक्ति की नई विधाएँ:

- ♦ पटकथा लेखन, संवाद लेखन और गीत लेखन जैसी विधाओं ने साहित्यकारों को सृजन के नए मार्ग दिए।
- ♦ गुलज़ार, जावेद अख्तर और प्रसून जोशी जैसे साहित्यकारों ने फिल्मों में भाषा को नया रंग और रस प्रदान किया। उनके गीतों और संवादों में काव्यात्मकता के साथ गहराई भी दिखाई देती है। उदाहरण के लिए गुलज़ार का गीत – ‘तुम आये तो आया मुझे याद, गली में आज चाँद निकला..’ आज भी काव्य और भावनाओं का सुंदर उदाहरण है।

3. साहित्य को जनप्रिय बनाना:

- ♦ साहित्यिक संवादों के कारण दर्शकों को भाषा की सुंदरता का अनुभव होता है। जैसे फिल्म ‘वक्त’ (1965) में राजकुमार का संवाद – ‘जिनके घर शीशे के होते हैं, वो दूसरों पर पत्थर नहीं फेंका करते’ – आज भी प्रसिद्ध है।

4. साहित्यकारों की लोकप्रियता में वृद्धि:

- ♦ हरिवंश राय बच्चन के काव्य का प्रभाव अमिताभ बच्चन के संवादों और अभिनय शैली में भी देखा गया है। गुलज़ार के गीतों ने उन्हें एक साहित्यिक आइकन बना दिया। उनकी रचनाएँ पाठ्यक्रमों में पढ़ाई जाती हैं।

हिन्दी सिनेमा के हिन्दी साहित्य पर नकारात्मक प्रभाव

1. भाषाई शुद्धता में गिरावट:

- ♦ आधुनिक फिल्मों में अंग्रेजी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग हुआ है। ‘हिंग्लिश’ (Hindi + English) ने साहित्यिक हिन्दी की गरिमा को कमजोर किया है। उदाहरण के लिए, फिल्मों में अब संवाद होते हैं – ‘Lets go यार!’, ‘Its okay, कोई बात नहीं।’ इस प्रकार की भाषा से साहित्यिक हिन्दी प्रभावित होती है।

2. संवादों में अशुद्धियाँ और बाजारवाद:

- ♦ संवादों में गंभीरता की जगह चुटीले, हल्के-फुल्के और कभी-कभी अभद्र शब्दों का प्रयोग होने लगा है। इससे युवा पीढ़ी में भाषा के प्रति गंभीरता कम हुई है।

उदाहरणस्वरूप, ‘मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस.’ जैसी फिल्मों की भाषा मनोरंजक तो है, परन्तु साहित्यिक नहीं।

3. क्षेत्रीय बोलियों की उपेक्षा:

- ♦ भोजपुरी, अवधी, ब्रज जैसी बोलियाँ जो हिन्दी साहित्य का अभिन्न हिस्सा हैं, फिल्मों में या तो उपेक्षित हैं या केवल हास्य का माध्यम बनकर प्रस्तुत होती हैं।
- ♦ इससे इन बोलियों के प्रति सम्मान में गिरावट आती है, जबकि इनका साहित्यिक महत्व अत्यधिक है।

4. गंभीर साहित्यिक विषयों की अनदेखी:

- ♦ अब फिल्मों में अधिकतर विषय रोमांस, एक्शन और हास्य तक सीमित हो गए हैं।
- ♦ सामाजिक, दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक विषयों पर आधारित साहित्यिक कृतियाँ अब सिनेमा में स्थान नहीं पा रही हैं।
- ♦ उदाहरण के लिए, मुक्तिबोध, रेणु या निर्मल वर्मा जैसे लेखकों की कृतियाँ अब तक फिल्मों में नहीं आई हैं।

समन्वय की आवश्यकता

सिनेमा और साहित्य दोनों समाज का प्रतिबिंब होते हैं। जहाँ साहित्य विचार देता है, वहीं सिनेमा उन्हें दृश्य रूप देता है। यदि दोनों के बीच समन्वय बना रहे तो भाषा का शुद्ध विकास संभव है। फिल्म निर्माता अपनी फिल्मों में साहित्यिक मूल्यों को बनाए रखें। लेखकों को आज की पीढ़ी से संवाद स्थापित करने के लिए आधुनिक माध्यमों का प्रयोग करना चाहिए।

हिन्दी सिनेमा ने हिन्दी साहित्य को लोकप्रियता, पहुँच और नया मंच प्रदान किया है। लेकिन इसके साथ ही यह आवश्यक है कि हम भाषा की शुद्धता, साहित्य की गहराई और विषयों की विविधता को भी संरक्षित रखें। जब सिनेमा साहित्य से प्रेरणा लेकर उसे सम्मान के साथ प्रस्तुत करेगा और साहित्य सिनेमा की व्यापकता से लाभ उठाएगा, तब हिन्दी भाषा और साहित्य दोनों का समृद्ध भविष्य सुनिश्चित होगा। □

कहानी से पटकथा तक का सफर



श्री अभिनव कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

ब्रह्मांड के तमाम सजीव-निर्जीव जीव एवं वस्तु एक कहानी को समेटे बैठे होते हैं। कहानियों को चाहे कितनी जोर से कहा जाए, उनमें एक सन्नाटा जरूर होता है। उन्हें न भी कहा जाए, तो उनमें खुद का एक कोलाहल मौजूद होता है। कहानियों को पता होता है कि उन्हें प्रकाशित भी कर दिया जाए, तो वह हर कोने तक तो नहीं पहुँच पाएँगी। फिर भी पन्ने पर लिख दो, तो वे खड़खड़ाने लगती हैं। हाय ये बेताब कहानियाँ।

कहानियाँ दूसरी कहानियों में घुसने की इच्छा रखती हैं, वहीं कहानियों के अंदर भी कई कहानियाँ होती हैं और कहानियाँ चाहती हैं कि उनकी उन कहानियों में कोई अन्य कहानी न घुस जाए।

चलो घुस भी गए तो क्या? कहानियाँ बहुत परिपक्व हों, जरूरी नहीं। कहानियाँ भी रास्ता भटक सकती हैं, उन कहानियों में घुस सकती हैं, जहाँ उन्हें नहीं घुसना था। दबे पाँव क्यों घुसे? पता तो चलने देते ना। चलो पता भी नहीं चलने दिया, लेकिन कहानी-कहानी में ही सराहा क्यों? जब तक पता चला कि कहानी में इतनी अवैध घुसपैठ करा दी गई है, कहानी सहम गई। किसी दूसरी कहानी में बदलाव क्यों करना? कहानी-रूपी विमान क्या अब घुसने वाले लोग उड़ाएँगे। उस कहानी पर तो कहानीकार का कॉपीराइट है ना? उसे अपनी कहानी से जोड़कर कोई मोड़ दो न भाई। न ही उस

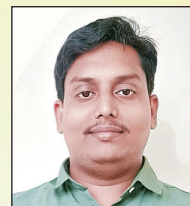
कहानी को मोड़कर उसकी बंदूक बनाकर कहानीकार पर ही तान दो। जब अपनी कहानी ही समझ नहीं आती है, दूसरी कहानियाँ क्या खाक समझ आएँगी।

कहानियाँ दूसरी कहानियों का पीछा भी करती हैं। कहानी को पता ही नहीं चलता कि कौन-सी कहानी किस कहानी के साथ मिलकर उसपर नजर गड़ाए हुए है। कहानियों में अच्छाई और बुराई का दर्शन कहानीकार और श्रोता के बीच का महज एक संवाद होता है। ब्रह्मांड के जीव-वस्तु और उनकी कहानियाँ अलग भी हो सकती हैं, नहीं भी।

कहानियाँ बीत जाती हैं, तो कहानीकार शांत हो जाता है। उसे यह भ्रम हमेशा रहता है कि कहानियाँ लौटकर वापस नहीं आएँगी। कभी-कभी कहानियाँ आपस में रस्सियों की गुत्थी की तरह उलझती जाती हैं। कमजोर रस्सी की कहानी डर से सहम जाती है कि वह इस घुटन में दम ना तोड़ दे। इतने में एक मजबूत कहानी वाली रस्सी जैसे उसे अपने गोद में ले लेती है। गोद में भी है तो क्या, है तो अब भी गुत्थी में ही। इतना तो समझ गया कि कहानी बुनने से बेहतर है स्वेटर बुनना, जाड़े में गर्मी का एहसास तो होगा।

शीर्षक तो 'कहानी से पटकथा तक का सफर' है, लेकिन अब तक कहानियों की बात ही हो रही है। पटकथा की बात करने की जरूरत भी नहीं है, क्योंकि गुत्थी ही पटकथा है। □

येलागिरी की यात्रा



श्री पंकज शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

कहते हैं कि यात्रा कुछ दे न दे, नई सीख और अनुभव अवश्य देती है, और हमारी दैनिक दिनचर्या की व्यस्तता के बीच अगर यात्रा हो तो ये अनुभव और भी सुखद बन जाता है। मैं भी उन्हीं में से एक सुखद यात्रा के अनुभव को साझा कर रहा हूँ। बात उन दिनों की है जब मेरी तैनाती तमिलनाडु के कार्यालय में थी। अगस्त का महीना था और चेन्नई का मौसम पल-पल अपना तेवर बदल रहा था। कार्यालय में सभी लोग आम दिन की तरह ही अपने कार्य में मग्न थे। तभी एक खबर बिजली की तरह कौंधी कि कार्यालय से येलागिरी की यात्रा पर जाने का विचार किया जा रहा है। किसी के मन में सूचना की पुष्टि होने की जिज्ञासा जागी, तो किसी के मन में यात्रा में सहयात्री चुनने की खुशी। मेरे मन में भी कई जिज्ञासाएँ थीं, और उन में से प्रमुख ये कि ये येलागिरी में खास क्या है?

येलागिरी, तमिलनाडु राज्य के तिरुपत्तूर जिले में स्थित एक पर्वतीय स्थल (हिल स्टेशन) है, जिसकी ऊँचाई लगभग 1400 मीटर है और लगभग 14-15 बस्तियों से मिलकर बना और 28 वर्ग मील के क्षेत्रफल में फैला यह क्षेत्र पूर्वी घाट पर्वत श्रृंखला का एक हिस्सा है। इस के संबंध में कई लोक-कथाएँ भी प्रचलित हैं जिसके अनुसार भगवान विष्णु पृथ्वी पर आए, तो उन्होंने इन्हीं पहाड़ियों पर अपने पैर रखे। चूँकि लोग उनका भार सहन नहीं कर पा रहे थे, और डर से 'येलो' अर्थात् चिल्लाए, जिसके बाद इसका नाम येलागिरी हो गया। एक और मान्यता के अनुसार, बाद में भगवान विष्णु, देवी लक्ष्मी

से विवाह के लिए इन पहाड़ियों पर आए, जिन्हें बाद में येलागिरी थायर के नाम से और इस क्षेत्र को येलोश्वरम के नाम से जाना जाने लगा।

देखते-देखते समय बीता और यात्रा की तिथि भी आ ही गई। दरअसल, इस दो दिवसीय यात्रा का प्रबंध कार्यालय द्वारा ही किया जा रहा था तो इस कार्य में कार्यालय प्रधान और विभागाध्यक्ष की भागा-दौड़ी और बैचेनी साफ तौर पर देखी जा सकती थी। यात्रा के सफल प्रबंधन में लोग ऐसे प्रपफुलित और सक्रिय दिख रहे थे जैसे किसी बेटे की शादी में पूरा गाँव लगा हो, कोई पानी की व्यवस्था में है, तो कोई हमारे लिए बसों में हमारी टिकासन चिन्हित करने में। जो भी हो हमारा गंतव्य स्थान हमारे प्रस्थान से करीब 230 किलोमीटर की दूरी पर था, तो प्रातःकाल ही निकलना स्वभाविक था। लगभग छः बजे हमारी यात्रा शुरू हुई, बसों में बैठे सभी लोग अति प्रसन्न हुए। अक्सर शहरों में लोग अपने प्रतिदिन के कार्य की भागम-भाग में इतने व्यस्त होते हैं कि स्वयं के लिए भी सुकून के दो पल नहीं निकाल पाते हैं और इस बीच इस यात्रा का होना सच में किसी दैव अवसर से कम न था। बस के चलते ही ऊर्जा का संचार सभी के अंदर होने लगा और लोगों ने नाचना गाना शुरू कर दिया। इस बीच दो घण्टे कब बीत गए पता भी नहीं चला और बस एक होटल के समीप जा कर रुकी। यहाँ पहले से ही नाश्ते और जलपान का बहुत ही उत्तम प्रबंध किया गया था। नाश्ते के बाद हम लोग फिर से अपने गंतव्य की ओर

आगे बढ़ चले और हमारी सवारी सड़क पर सरपट दौड़ने लगी। दोपहर के करीब हमारी बस येलागिरी पहाड़ी की तलहटी पर पहुँची और अब आगे का रास्ता हमें करीब 1400 मीटर की ऊँचाई पर घुमावदार सर्पनुमा रास्ते से होते हुए तय करना था।

जैसे ही हमारी बस चढ़ाई के लिए आगे अग्रसर हुई, बारिश की बूँदों और ठण्डी हवाओं ने माने हमारा स्वागत करना शुरू कर दिया और सर्पिल मार्ग से होते हुए कभी पहाड़ी तो कभी घाटी को देखते हुए मन मंत्रमुग्ध होने लगा। पहाड़ी की ऊँचाई से तलहटी का दृश्य सच में मनमोहक था। देखते-देखते हमारी बसें चोटी पर एक रिजॉर्ट पर रूकीं। वहाँ हम लोगों ने भोजन की लुत्फ उठाया और फिर थोड़ा विश्राम किया। करीब शाम के 4 बजे हम लोग फ्लावर पार्क और पुंगनूर झील के लिए निकले। चूँकि फ्लावर पार्क शाम 4 बजे तक ही खुला था, तो हमने किसी तरह से जल्दी-जल्दी प्रवेश तो कर लिया पर समय के अभाव के कारण पूरा परिभ्रमण करना रह गया किंतु जितना भी देखा वह बहुत सुंदर था। उद्यान में तरह-तरह के फूल और पेड़ थे। उद्यान के बीच झरना जैसे उद्यान की छटा में चार चाँद लगा रहा था। यहाँ से निकल कर दोनों ओर हस्तशिल्प की और चाय नाश्ते की दुकानों से गुजरते हुए हम पुंगनूर झील पहुँचे। पुंगनूर झील 60 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैली मानव निर्मित झील है, जो येलागिरी का प्रमुख आकर्षण केंद्र है। यहाँ सभी ने नौकाविहार का आनंद लिया। उद्यान से घिरी इस झील को देख कर ऐसा लगा कि जैसे इसने प्रकृति की झटा को समेटे हुए हरियाली का श्रृंगार किया हो। यह वाकई बहुत सुंदर दृश्य था। वक्त बीता, शाम ढली और फिर हम अपने अस्थाई आशियाने की ओर बढ़ चले। रिजॉर्ट पर रात्रि भोजन का विशेष प्रबंध किया गया था और फिर रात्रि भोजन के साथ-साथ बॉनफायर और संगीत जैसे कार्यक्रम की भी व्यवस्था की गई थी। हालांकि बॉनफायर के पहले बारिश ने थोड़ी खलल अवश्य पैदा की किन्तु संगीत कार्यक्रम के लिए

लोगों का जोश इस कदर था कि बारिश की बूँदें भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाईं। देखते-देखते संगीत की एकरूपता में मग्न हो कर सब मस्ती और जोश में थिरकने लगे। इसके उपरांत सबने भोजन किया और विश्राम कक्ष की ओर बढ़ चले। रात की हल्की बारिश ने वातावरण को और ठण्डा व आरामदायक बना दिया। सुबह उठे तो सभी के साथ हाइकिंग के लिए चल पड़े। सुबह-सुबह क्षितिज पर फैली लालिमा, पहाड़ियों की ओस की बूँदों में लिपटी शीतल हवा, मोर और अन्य पक्षियों की अवाज ने सभी का मन मोह लिया। रिजॉर्ट लौट कर पुनः सबने नाश्ता किया और फिर हम सब अपने अगले पड़ाव जलगमपराई झरने की ओर बढ़ चले। एक तो बारिश का समय और दूजा बीच-बीच में सूर्य भगवान की बादलों के साथ आँखमिचोली के कारण वातावरण थोड़ा गर्म हो चला था किन्तु झरने के पास जल के शोर और शीतलता ने जैसे सारी तपन हर ली और सभी ने प्राकृतिक झरने का आनंद लिया और पास के ही मंदिर में पूजा के लिए निकल गए। फिर सब चौपहिये पर पुनः विराजमान हुए और मध्यान भोजन के लिए पास के ही स्थल पर रूके, तरह-तरह के पकवानों का स्वाद लिया और फिर अपनी दैनिक दिनचर्या के लिए सज्ज हुए। बस पुनः चेन्नई के लिए लौटी और हम रात तक चेन्नई पहुँच गए।

दिन-भर की थकान भरी अवधि के मध्य इस दौरे का होना सच में अत्यंत सुखद और आनंदमय अनुभव था, जिसकी स्मृतियाँ सदैव मन को एक सुखद एहसास देती रहेंगी। हालांकि निरंतर दो दिवसीय यात्रा तन को अवश्य थका देती है परन्तु मन में नई ऊर्चा का संचार भी करती है। अक्सर ऐसी यात्राएँ हमें खुद से मिलने का अवसर देती हैं जिससे हम अपने भीतर छिपे बचपन, प्रकृति के प्रति लगाव और सुकून को ढूँढ़ पाते हैं। □

हिन्दी सप्ताह - 2024 के समापन समारोह की कुछ झलकियाँ



